स्त्री : एक शक्ति

(परमगुरु श्री स्वामी शिवानंद
के चरण कमलों में सादर समर्पित)

प्रथम संस्करण : 2009

(1000 प्रति ज्ञान यज्ञ हेतु निःशुल्क वितरणार्थ)

स्वर्गीय श्रीमती लक्ष्मी देवी जी की
ग्यारहवीं पुण्यतिथी पर
उनके सुपुत्र श्रीमान अजय अग्रवाल
द्वारा प्रकाशित। स्वर्गीय माँ के श्री चरणों में
उनके सम्पूर्ण परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

है शक्ति नारी में अपार। जिस दिन वो जाग जाएगी, अपना समाज में एक अलग स्थान बना पाएगी।

है वो शक्ति स्वरूपा। घर गृहस्थी में रहते हुए, सेवा करते हुए, वह प्राप्त कर सकती है ब्रह्म ज्ञान ।

करना है पुरूषार्थ उसे आज तोड़ना है बन्धनों को। जीर्ण शीर्ण करना है पुरानी घिसी पिटी मान्यताओं को।

चमकाना है व्यक्तित्व को अपने।

अपने प्रकाश से अनेकों को आशा की किरण दिखानी है।

बनाना है बच्चों का भविष्य उज्ज्वल। एक सुदृढ़ समाज की नींव उसे रखनी है।

अपने चरित्र की गरिमा से, जन जन को आप्लावित करना है। जाग्रत करना है, बच्चों को अपने गुण और चरित्र से, शब्दों से नही, व्यवहार से प्रभावित उनको करना है।

भारत को पुनः उन्नति के चरम शिखर पर ले जाना है।

नारी भी एक इन्सान है। उसकी भी अपनी इच्छाएँ और महत्वकाँक्षाएं है। अधिकांश लोग इस तथ्य को अस्वीकार करते हुए नारी की अस्मिता का आदर नहीं कर पाते। आज भी समाज नारी को उसी पुराने घिसे पिटे रोल में क्यों देखना चाहता है? समय के परिवर्तन से नारी की शिक्षा को महत्व अवश्य दिया जाने लगा है, पर समान अधिकारों से नारी आज भी वंचित ही है। आज के युग में नारी, पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर धन कमा रही है, परन्तु जब नौकरी छोड़ने का प्रश्न आता है तो यह निर्णय नारी को ही लेना पड़ता है। आर्थिक स्वावलंबन ने नारी को एक नई पहचान और आत्म विश्वास अवश्य दिया है, परन्तु अपने निर्णय लेने में वो आज भी असक्षम है क्यों?

—: एक महत्वपूर्ण सूचना :—

रिखिया की कन्याओं के मधुर कीर्तन,

श्री महिषासुर मर्दिनी स्तोत्रम् और सौन्दर्य

लहरी का आनन्द उठाने के लिए लॉग

ऑन टू रिखिया पीठ वेबसाईट —

www.rikhiapeeth.net

इस वेबसाईट पर आपको मिलेंगे परमहंस

श्री स्वामी सत्यानंद के सत्संग और अन्य कई महत्वपूर्ण

तुम अद्वितीय हो। तुम अनुपम हो। तुम ईश्वर की एक दिव्य कृति हो।

रचा है ईश्वर ने तुम्हें अपने ही रूप में, प्रतिरूप में।

तुम सृजन करती हो नव सृष्टि का, वह ईश्वर भी तो एक रचनाकार है।

फिर कौन तुम्हें हीन कहता और समझता है?

जो तुम्हें हीन कहता है, वह स्वयं ही हीनता के अपराध बोध से ग्रसित होता है।

मत पालो कुंठाएँ अपने अन्तस् में। मत गँवाओ जीवन ये व्यर्थ।

भेजा है ईश्वर ने तुम्हें इस पृथ्वी पर एक खास उद्देश्य से।

बनो निःस्वार्थ, निष्काम।

जाग्रत करो अपने निहित गुणों को।

जिस दिन तुम जाग जाओगी, बनोगी सबला, न रहोगी अबला।

बनोगी एक ऐसी नेत्री, विश्व प्रेम ही जिसका नारा होगा।

करोगी काम असंभव इस धरा पर।

हो जाओगी अमर जीते जी ही।

सहकारी मुद्रणालय एवं प्रकाशन संस्थान मर्यादित, सेक्टर–10, भिलाई से मुद्रित

स्त्री : एक शक्ति

– प्रीति अग्रवाल –

विषय सूची

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.
1.	नारी एक शक्ति	01
2.	परमहंस स्वामी सत्यानंद–स्त्रियों के कर्णधार	01
3.	मेरी शक्ति	02
4.	नारी पुरूष से बेहतर है– स्वामी सत्यानंद	04
5.	नारी वन्दनीय है– श्रीमती कृष्णा देवी के प्रवचन से	05
6.	समस्त मातृशक्ति को मेरा प्रणाम	07
7.	एक स्त्री की कहानी	08
8.	अस्तित्व	09
9.	एक स्त्री की व्यथा	11
10.	नारी एक सृजनकर्त्री	13
11.	स्त्री	14
12.	क्यों समझा जाता है नारी को कमजोर?	15
13.	नारी और हीनता	17
14.	मासिक धर्म और पूजा– स्वामी सत्यानंद के सत्संग से	19
15.	डर और स्त्री	20
16.	अब क्यों डरूँ जमाने से मैं?	21
17.	शिक्षा और नारी	22
18.	स्त्री के लिए एक नई दिशा	24
19.	नारी और सार्थक जीवन	25
20.	जब मैं असहाय हो जाती हूँ।	27
21.	मेरे श्वसुर–मेरे मित्र (सत्य कथा)	29
22.	एक सच्ची कहानी–मेरे पति की रिखिया पीठ से जुड़ने की	31
23.	सौन्दर्य लहरी और मैं (सत्य कथा)	33
24.	सेवा, प्यार और दान – एक रामबाण अस्त्र !	35
25.	पल पल देखती हूँ चमत्कार सेवा का	37
26.	क्या बयान करूँ उस प्रभु की कृपा का?	38
27.	माँ– एक अद्वितीय उपहार विधाता का	40
28.	स्त्रियों को मेरा आवाहन	41
29.	क्या चाहिए स्त्री को आज? (स्वामी सत्यानंद की शिक्षाओं से)	43
30.	रिखिया पीठ की कन्याएँ–एक अनुभव	44
31.	रिखिया पीठ की महिला संन्यासिन	45
32.	स्वामी सत्संगी – एक अनोखी माँ	46
33.	माँ कैकेयी – एक कलंकिनी ?	47
34.	नारी का बदलता स्वरूप	48

स्त्री को आज जागना है अपने अधिकारों के प्रति, अपने कत्तव्यों के प्रति।

स्त्री को आज बनना है स्वावलंबी।

स्त्री को आज बनना है एक ऐसी धुरी जिस पर विश्व को नाज हो।

बनना है सजग अपनी आत्मा के प्रति और अपना चरित्र सुधारते हुए, बच्चों में एक नूतन आध्यात्मिकता की नींव डालनी है।

तभी बनेगी वह एक संपूर्ण नारी जिस पर देश को गर्व होगा, ईश्वर को गर्व होगा।

जिस रोज अपने सत्य स्वरूप को जान पाएगी, पहचान पाएगी, करेगी संपूर्ण विश्व को आलोकित।

करेगी संपूर्ण विश्व को आलोकित क्योंकि देना उसका स्वभाव है।

अपने नैसर्गिक गुणों को पोषित करते हुए, अपने लिए चुनेगी दिव्य राह जो उसे अनन्त सुख, शांति और प्रसन्नता दिलवाएगी।

पाकर अनन्त सुख, शांति और प्रसन्नता को, वह उसे अपने चारों ओर फैलाएगी और अपने साथ–साथ अनेकों का जीवन सफल बनाएगी।

प्रस्तावना

आज के युग में स्त्री हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रही है। यद्यपि कई पिछड़ी जातियों में आज भी स्त्रियों की शिक्षा पर जोर नहीं दिया जाता है। स्त्री के अन्दर भी एक आत्मा है जो ईश्वर का अंश है। अतः वह भी शिक्षा, पूजा और अन्य सम्मान की उतनी ही अधिकारिणी है जितना एक पुरुष। परमहंस स्वामी सत्यानंद से जब किसी ने पूछा कि आज स्त्रियों को सबसे अधिक किस चीज की आवश्यकता है। तब स्वामी सत्यानंद ने कहा ''आज स्त्रियों को एक ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलंबी बना सके। चरित्र, नम्रता जैसे गुण भी ठीक हैं परन्तु वर्तमान समय की यही आवश्यकता है। स्त्री को जो लोग मारते हैं वो एक पशु वृत्ति का प्रदर्शन करते हैं।''

ये पुस्तिका लिखने का एक मात्र उद्देश्य है कि आज स्त्री जागे और अपने को पहचानने का प्रयत्न करे। आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने पर वह अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकती है। पूरे परिवार में स्त्री एक धुरी के समान है जो अपने चरित्र के द्वारा समाज को राम, कृष्ण और ईसा मसीह जैसे दिव्य उपहार अपनी सन्तान के रूप में दे सकती है। एक बच्चे की प्रथम गुरु माँ ही होती है, न केवल जन्म के पश्चात् अपितु जन्म से पहले भी। आखिर अभिमन्यु ने सुभद्रा के गर्भ में ही तो चक्रव्यूह की रचना का ज्ञान ग्रहण किया था। परिवार में रहते हुए, अपने कर्तव्यों को निभाते हुए, नारी एक दासी नहीं, एक दिव्य व्यक्तित्व की स्वामिनी बन सकती है।

— **प्रीति अग्रवाल**

नारी एक शक्ति

(आदिशंकराचार्य विरचित सौंदर्य लहरी के प्रथम श्लोक से उद्धृत् मेरा भाव)

शक्ति है तो शिव का महत्व है। शक्ति है तो स्पंदन है।
शक्ति है तो गति है। शक्ति है तो जीवन है।
शिव है निरंतर, सतत सजगता। शक्ति के आगमन से ही है शिव की सर्वत्र सत्ता।
हैं शिव और शक्ति दोनों परस्पर मिले हुए। हैं शिव और शक्ति दोनों ही एक दूसरे के पूरक। फिर भी शक्ति में गुण अधिक हैं। शक्ति के कारण ही जीवन है।
बिना माँ के पिता अकेला सन्तान उत्पन्न कर नहीं सकता।
बिना स्त्री के पुरुष अकेला घर गृहस्थी सुचारू रूप से चला नहीं सकता।
एक विधुर को चाहिए एक स्त्री अपने बच्चों के पालन पोषण के लिए।
एक विधवा पालती है, पोसती है, अपने बच्चों को अकेले ही जमाने से टकराते हुए।
करती है सामना वह संसार का और उफ तक नहीं करती है।
फिर भी पुरुष प्रधान समाज में नारी की शक्ति को कम समझा जाता है, हीन समझा जाता है।
है नारी के पास उसकी भावना का बल। भावना के बल पर ही वह शीघ्रतयाः ईश्वर के श्री चरणों से जुड़ती है।
करती है विश्वास संत पर और मनोयोग से उसकी आज्ञाओं का पालन करती है।
अपने इसी गुण के कारण वह अनेकों बार छली जाती है, प्रताड़ित की जाती है।
बार बार गिरने के बावजूद भी वह विश्वास रूपी अमूल्य धन को अपने हृदय में सँजोए रखती है।
है नारी इस धरा पर शक्ति का रूप जो पुरुष के रूप में शिव का सम्बल बनती है।
जो करता है अपमान शक्ति का, वो अपने शिव स्वरूप से दूर बहुत चला जाता है।
पाता है दुःख अनेकों और जन्म मरण के झूले में ही झूलता रहता है।
है हर नारी दुर्गा, काली और सरस्वती। आज नारियों को मेरा आवाह्न है कि वो स्वयं को पहचाने और समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ; क्योंकि उन्हें ईश्वर ने इसीलिए इस धरा पर भेजा है।

परमहंस स्वामी सत्यानंद सरस्वती—स्त्रियों के कर्णधार ?

आज समाज में स्त्री को एक निम्न दर्जा दिया जाता है। यद्यपि भारतीय संस्कृति में अनेक स्त्रियों के उच्च स्तर के उदाहरण गार्गी और सती अनुसूया के रूप में सर्वत्र विदित हैं, फिर भी अनेक रूढ़िवादी मतों और पंथो ने स्त्रियों को पूजा स्थलों में जाने

और पूजा करने से भी निषेध किया है। ''यत्र पूज्यन्ते नार्याः रमन्ते तत्र देवाः।'' इस वाक्य का अर्थ है कि जहाँ नारी की पूजा की जाती है, अर्थात् नारी को सम्मान दिया जाता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। परन्तु व्यवहार में यह शिक्षा बिल्कुल भी दिखाई नहीं पड़ती।

गत् कुछ वर्षों से, प्रत्येक परिवार में बच्चों की संख्या में कमी आने के कारण, लड़कियों को भी उच्च शिक्षा के अवसर सहजता से सुलभ हो रहे हैं। कुछ वर्षों से परमहंस स्वामी सत्यानंद के लेख पढ़ते पढ़ते; मुझे अपने स्त्री होने पर शर्म आने की अपेक्षा गर्व होने लगा है। श्री स्वामी जी ने बार बार अपने सत्संगों में कहा है कि स्त्रियाँ, पुरूषों से अधिक ईमानदार, मेहनती और वफादार होती हैं। उन पर किसी भी काम की जिम्मेदारी सरलता से छोड़ी जा सकती है।

स्त्रियों का कुण्डिलनी जागरण भी पुरूषों की अपेक्षा अतिशीघ्र होता है। अनेक पुराणों में स्त्री को शक्ति माना गया है। भारत में नवरात्रि पूजन में माँ दुर्गा क्या स्त्री का प्रतीक नहीं हैं ? भावना प्रधान होने के कारण, स्त्री भगवान पर विश्वास अधिक करती है। श्री स्वामी जी ने सर्वप्रथम स्त्रियों को संन्यासिन बनने का सुअवसर प्रदान किया। कई रूढ़िवादी पंथों ने इसका विरोध भी किया। परन्तु अब अनेक सम्प्रदायों में संन्यासी स्त्रियाँ देखी जा सकती हैं।

श्री स्वामी जी ने कहा है कि प्रत्येक स्त्री को अपना भविष्य चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए। यदि वह चाहे तो विवाह करे; अन्यथा नहीं। अपनी तपस्थली रिखिया पीठ में भी, श्री स्वामी जी ने कन्याओं की शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया है। रिखिया पीठाधीश्वरी स्वामी सत्यसंगानंद, एक माँ की तरह वहाँ आने वाले 1500 बच्चों का मार्गदर्शन पूर्ण कुशलता से कर रही हैं।

एक सुघड़ और शिक्षित स्त्री अपने बच्चों को शिक्षित करते हुए; संस्कारों की दृढ़ नींव बच्चों में डालती है। एक बच्चे की सर्वप्रथम गुरु, उसकी माता ही होती है। आज आवश्यकता है कि समाज पुनः स्त्री का खोया हुआ गौरव उसको प्रदान करे; आखिर गृहस्थी की गाड़ी का वह एक महत्वपूर्ण पहिया है।

मेरी शक्ति

मुझे विश्वास है अपने गुरु पर पूर्ण कि समस्त दुविधाएँ मेरी वो मिटाएँगे।
मुझे विश्वास है अपने गुरु पर पूर्ण कि समस्त बाधाएँ मेरी वो हटाएँगे।

कर देगें मार्ग मेरा निष्कंटक, राह के काँटे सब स्वयं उठाएँगे।
बिछा देंगे फूल मेरे मार्ग में, मुसीबतों से मुझे बचाएँगे।
न होगी देर उनके आने में, गर दुनिया वाले मुझे सताएँगे।
आ जाएँगें वो किसी भी रूप में, रंग में, सहारा मुझे प्रदान करेंगे।
इसी विश्वास के बल पर मैं पहाड़ों से भी टकरा जाऊँगी
कूद जाऊँगी आग में, अथवा बीहड़ वन में चली जाऊँगी।
है शक्ति इतनी उनमें कि वो मेरे प्रारब्ध की कालिमा को पूर्णतया मिटा देंगे।
गर उनकी आज्ञा का पालन मैं शत् प्रतिशत् कर सकी तो आनन्द के गहरे सागर में मुझे डुबाएँगें।
मैं हूँ, उनकी शिष्या, मैं क्यों किसी से डरूँ ?
जब वो हैं समर्थ और शक्तिशाली, तो मैं क्यों किसी और का आसरा करूँ?
बचाएँगे हर विपत्ति से मुझको, जैसे आज तक बचाया है।
देंगे सहारा मुश्किलों में मुझको, जैसे आज तक दिया है।
निखारेंगे व्यक्तित्व मेरा, जैसे आज तक निखारा है।
मेरे अन्दर तक देख सकते हैं वो, ऐसा मैं मानती हूँ।
मेरी निष्कपटता और सरलता से वाकिफ हैं वो, ऐसा मैं मानती हूँ।
करती हूँ समर्पण पूर्ण मन से जब–जब, एक अदृश्य अनकही शक्ति से भर जाती हूँ।
ऐसे शक्ति के स्त्रोत से जुड़ कर फिर भला व्यथित बार–बार क्यों हो जाती हूँ?
है क्या ये मेरी तामसिक अथवा राजसिक वृत्ति ? अथवा कलियुग का है प्रभाव?
समर्पण करने से, सब कुछ उनके ऊपर छोड़ देने से असीम शान्ति का अनुभव अपने अन्तर में कर पाती हूँ।
वो हैं मेरी शक्ति, करूँ दिन रात उनकी भक्ति, ऐसा मैं चाहती हूँ।
पर बार बार मेरी वृत्ति संसार की वासनाओं, इच्छाओं की ओर दौड़ती है।
खैर गुरु को याद करके पुनः–पुनः, कुछ तसल्ली कर पाती हूँ।
हे गुरुदेव ! तुम सदा सर्वदा मुझे याद आते रहो।
तुम्हारे श्री चरणों से जुड़ी रहूँ। तुम्हारी शक्ति प्राप्त करती रहूँ। यही अब मैं चाहती हूँ।
मिलता है असीम सुख तुम्हारी आज्ञा पालन में।
अपने खुद के अनुभवों से हैरान मैं हो जाती हूँ।
चाहती हूँ सब लोग इस रहस्य को जानें और समझें।

ताकि मेरी ही तरह वो भी तुम्हारी शक्ति के हकदार बनें।
जान जाएँगें जिस रोज वो तुम्हारी शक्ति को, क्यों भटकेंगे विभिन्न कर्मकांडों में?
मेरी ही तरह गुरु आज्ञा को अपना धर्म बनाएँगे।
डूबेंगे तुम्हारी कृपा में, पाएँगे तुम्हारी दया को।
इसी जन्म में मालामाल हो जाएँगे।
कट जाएँगे समस्त कर्म बन्धन उनके।
अपने ही अन्तर में अनन्त सुख शान्ति प्राप्त कर पाएँगे।

नारी पुरुष से बेहतर है – स्वामी सत्यानंद

नारी पुरुष से बेहतर है। ये मेरा नहीं परमहंस श्री स्वामी सत्यानंद जी का कहना है।।
नारी पुरुष से अधिक लगन से कार्य करती हैं। ये मेरा नहीं स्वामी जी का अनुभव है।।
नारी पुरुष से अधिक मेहनत से कार्य करती है। ये मेरा नहीं स्वामी जी का अनुभव है।।
नारी सृजन करती है पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिरूप का।
नारी सिंचन करती है पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिरूप का।।
नारी असहनीय पीड़ा सहन करती है इस सृजन में।
नारी मुँह से ऊफ तक न करती है इस सिंचन में।।
नारी बनती है प्रत्येक जीव की प्रथम गुरु,
पहला कौर भी प्रत्येक जीव के मुँह में नारी ही डालती है।
और पुरुष कैसे भूल जाता है नारी के अहसानों को?
कभी अपना अनुशासन उस पर चलाता है पति बनकर।
कभी अपना अनुशासन उस पर चलाता है बेटा बनकर।।
नारी हर दुःख सहती है, अपनी सहनशक्ति का भरपूर प्रयोग करती है।
इस धरा पर इस सृष्टि में जीते–जीते अपमान से हजारों बार मरती है।
खून के घूँट पीती है। उस अपमान को अनेकों बार अपना भाग्य मानती है।
नहीं जानती है कि वह भी ईश्वर का ही प्रतिरूप है। उसके अन्दर भी एक दिव्य चैतन्य आत्मा है।।
अपने भाव को यदि वह ईश्वर की ओर मोड़ पाती है, तो ईश्वर कृपा का सहज ही अनुभव कर पाती है।
भाव ही है नारी की शक्ति, जो पुरुष के पास न्यून है।
भाव ही से नारी प्राप्त कर सकती है अपनी खोई हुई शक्ति। ईश्वर तो भाव के ही भूखे हैं।

नारी गर चाहती है अपना उत्थान, अपना कल्याण, तो तोड़ सकती है इन मोह की जंजीरों को।
उसके अन्दर अनन्त शक्ति है केवल उस की धारा को दिशा नहीं मिली है।
जिस रोज़ ये धारा ईश्वर की ओर बहने लगेगी, नारी पुरुषों से आगे निकलेगी।।
केवल और केवल आवश्यकता है जागने की, सजग होने की।
और अपने बनाए हुए इस भ्रमजाल से उसे निकलने की।।
ईश्वर तो दोनों हाथ फैलाए उसका इन्तजार करते हैं।
पग पग पर उस पर अपनी करुणा लुटाते हैं।
वो अपनी ग्राह्य शक्ति तो बढ़ाए। ईर्ष्या, क्रोध और परनिंदा का दामन तो छोड़े।
न बनाए स्वयं को कमजोर। न समझे स्वयं को किसी से कम।।
उसके अन्दर भी वही दिव्य आत्मा है जो पुरुष के अन्दर है।
फर्क केवल इतना है कि उसको पता नहीं है, किसी ने बताया नहीं है।।
और गर बताया भी है एक ने, तो अनेकों ने उसको दबाया भी है।
सेवा करे, पर डरे नहीं। कर्तव्य करे, पर मरे नहीं।।
जीए शान से। जीए मान से। जीए आत्म सम्मान से।।
प्रभु उसके साथ हैं ये पल–पल अनुभव करे। प्रभु उसको चाहते हैं, ये पल–पल अनुभव करे।।
अरे ज़माना साथ दे या न दे, परन्तु वह ऊपर वाला तो उसके साथ है।।
शक्ति मिलेगी उसको अनन्त इस एक विचार से, क्योंकि वह कम नहीं किसी भी प्रकार से।।
पुरुषों के वर्चस्व में उसका अस्तित्व कहीं खो गया है।
मैं कौन हूँ? मैं क्यों धरा पर आई हूँ? उसकी नजरों से ओझल हो गया है।।

नारी वन्दनीय है

(श्रीमती कृष्णा देवी के प्रवचन से)

श्रीमती कृष्णा देवी को मानस कोकिला कहा जाता है। रामचरित मानस का पाठ वो अपने मधुर स्वर में एकदम कोयल की भाँति गा कर सुनाती हैं। एक ऐसा समाँ वो बाँधती हैं, कि मानो समय पंख लगाकर उड़ जाता है। कथा को बहुत ही रूचिकर ढंग से प्रस्तुत करते हुए श्रीमद्भागवत और अन्य कई ग्रन्थों के रुचिकर, हास्यप्रद प्रसंग वो इतने खूबसूरत ढंग से जोड़ती हैं कि मन सहज ही उनमें रम जाता है। परमहंस स्वामी सत्यानंद की वो प्रिय शिष्या हैं और उनकी तपस्थली रिखिया

जाने से रामायण का पाठ वो ही करती हैं। पिछले अनेक वर्षों से वो रामायण पर प्रवचन दे रही हैं। ज्ञान और संगीत का एक अद्‌भुत संगम उनके प्रवचन में सहज ही सब भक्तों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

नारी की गरिमा का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे भारतवर्ष में नारी को एक बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है। हम सब कहते हैं 'भारत माता' की जय। तो अपने देश की धरती को माँ की तरह हम सब सम्मान देते हैं। अनेक शहीदों ने इस माँ की रक्षा के लिए स्वतंत्रता संग्राम में प्राण गँवाए हैं। हम गाय को अपनी माता मानते हैं और कहते हैं 'गऊ माता' की जय। किसी भी देश में नदी को माता नहीं कहा गया, परन्तु हम कहते हैं 'गंगा मैया' की जय। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि मैं नारी के भीतर सात रूप में रहता हूँ। नारी जब क्षमा करती है तो समझो कि मैं प्रकट होता हूँ। घर की छोटी–छोटी बातों को अनदेखा कर देना, क्षमा के गुण को अपनाना, अनेक कलह कलेशों से बचने का मार्ग प्रशस्त करता है। जहाँ भी मीठी वाणी का प्रयोग होता है, वहाँ मैं विद्यमान होता हूँ। जहाँ भी धृति अर्थात् धैर्य का समावेश नारी में होता है वहाँ मानो मैं उपस्थित हूँ। जहाँ भी श्री अर्थात् सौन्दर्य है वहाँ मैं उपस्थित होता हूँ। सौन्दर्य न केवल बाहर का अपितु अन्दर का भी। स्मृति भी मेरा ही एक रूप है। घर के कार्यों को याद रखते हुए समय से करना, घर में सुख, शान्ति बनाए रखने के लिए बहुत आवश्यक है। पति की कमीज में बटन टूट गया और समय पर न लगने से बड़ी परेशानी हो जाती है। मेधा भी मेरा ही रूप है। रिखिया में कन्याएँ इतने अच्छे भजन गाती हैं, अँग्रेजी बोलती हैं, संस्कृत के श्लोक भी खूब अच्छे ढंग से सुनाती हैं। आदिवासी, पिछड़े गरीब घरों की कन्याएँ और इतने अच्छे से हवन करवाती हैं कि बस पूछिए मत।

एक माँ का ही कार्य होता है बच्चे को हर प्रकार से सुयोग्य बनाना, समर्थ बनाना। रामायण में जानकी मैया क्या जगत जननी नहीं हैं ? लोक कल्याण के लिए अनेकों दुःख सहती हैं। भगवान श्री राम के रावण को मारने का हेतु बनती हैं। राजा राम कलंक से बचे रहें इसलिए गर्भावस्था में भी वन के कष्ट स्वीकार करती हैं। इतने बड़े राजा की बेटी, उससे भी बड़े चक्रवर्ती सम्राट की पुत्रवधु होने के बावजूद अपने दोनों बालकों को ऋषि आश्रम में अनेक कष्ट सहते हुए पालती हैं। लव और कुश अल्पावस्था में ही अपने पिता द्वारा छोड़े हुए अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को न केवल बाँध लेते हैं अपितु अयोध्या के सैनिकों का भी वीरता से सामना करते हैं। एक सन्त ने तो ये भी कहा हैं ''यत्र पूज्यन्ते नार्याः, तत्र रमन्ते देवाः'' अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा की

जाती है, उनको सम्मान दिया जाता है वहाँ देवता निवास करते हैं। अनुकरणीय व्यक्तित्व की नारी का सम्मान अवश्य ही वांछनीय है।

समस्त मातृशक्ति को मेरा प्रणाम्

समस्त मातृशक्ति को मेरा प्रणाम। समस्त सृजनकर्त्री को मेरा नमन।

गर नारी न होती तो सृष्टि न होती। गर शक्ति न होती तो शिव न होते समर्थ और शक्तिवान।

नारी है तो सृष्टि है। नारी है तो पुरुष का अस्तित्व है।

नारी है तो पुरुष की सत्ता है। नारी है तो उस परमपिता की लीला है।

शक्ति के बिना शिव अधूरे हैं क्योंकि शिव तो मात्र एक स्थिर शक्ति हैं।

शक्ति के बिना शिव अधूरे हैं क्योंकि शक्ति ही उनकी ऊर्जा की स्त्रोत है।

शिव है ब्रह्माण्ड की सजगता, परन्तु शक्ति से ही कण–कण में सतत स्पन्दन होता है।

शक्ति के बिना शिव कार्य नहीं कर सकते, परन्तु शक्ति अकेली ही सृजन कर सकती है।

ये मेरा नहीं आदि गुरु शंकराचार्य विरचित ''सौन्दर्य लहरी'' का आधार है।

शक्ति की है उपासना सर्वोपरि शाक्त तन्त्र में। शक्ति ही है सब की जीवन दात्री।

शक्ति की आराधना है एक संपूर्ण आराधना क्योंकि शक्ति भोग और मुक्ति दोनो देती है।

सौन्दर्य लहरी है आराधना देवी की जिसको आदि गुरु शंकराचार्य ने ध्यान में कहा है।

यद्यपि शंकराचार्य अद्वैतवादी थे फिर भी देवी के दर्शन के पश्चात् उन्होंने माँ की सत्ता को स्वीकारा है। न केवल स्वीकारा है अपितु चेतना के उच्चतम शिखर पर पहुँच कर उन्होंने माँ की स्तुति 103 श्लोकों से की है।

किया है देवी के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन उच्चतम चेतना से जो उन्होंने देखा।

हर नारी देवी का ही रूप है स्वरूप है गर वो अपनी चेतना को ऊँचा उठा पाती है।

बन पाती है अगर निष्काम, निःस्वार्थ तो स्वतः ही अपने दैवी स्वरूप को जान पाती है।

स्त्री को भरा है ईश्वर ने अद्वितीय गुणों से, जिनको वह आज केवल और केवल अपने परिवार पर लुटाती है। परिवार पर लुटाए पर थोड़ा सा घर से बाहर निकले, दूसरों के बारे में सोचे।

घर में काम करने वाले नौकरों को भी यदि वह अपने बच्चों की तरह ही प्यार दे पाती है

तो शीघ्र ही अपना उत्थान कर पाती है।
बाँध लिया है स्त्री ने आज स्वयं को मोह और आसक्ति के बंधनों में।
जकड़ लिया है स्त्री के दैवी स्वभाव को मोह और ममता की इन बेड़ियों ने।
जिस रोज ये बेड़ियाँ वो तोड़ पाएगी, अपने स्व से जुड़ पाएगी, घर में रहते हुए ही अपने दैवी स्वरूप का दर्शन कर पाएगी।
हो जाएगी वह मुक्त इन बंधनों से। बनेगी वह शक्ति इस धरा पर।
एक ऐसी शक्ति जो इस धरा के कण कण को अपनी ऊर्जा से आप्लावित करेगी।
न डरेगी किसी से और अपने स्नेह, प्यार और ममता से जन जन का कल्याण करेगी।
आज भूल चुकी है कि वो शक्ति है। आज भूल चुकी है वो कि उसे ईश्वर ने एक विशेष उद्देश्य से गढ़ा है।
सेवा करे परन्तु दासी न बने। प्यार करे पर गुलाम न बने। दान करे पर अपेक्षा न करे।
बने एक मार्गदर्शिका और लाखों का मार्गदर्शन करे।
बने एक मशाल और लाखों का जीवन रोशन करे।
खुद भी चमके और दूसरों को भी चमकाए, यही उसका जीवन दर्शन हो।
यही है सपना मेरे गुरु स्वामी सत्यानंद सरस्वती का
क्योंकि स्वयं को स्त्रियों के कर्णधार बताते हैं वो।
कहते हैं मेरा जन्म ही हुआ है नारी जाति के उत्थान के लिए।
और न केवल कहते हैं अपितु अपनी तपस्थली रिखिया पीठ में अनेक कन्याओं और स्त्रियों के उद्धार का मार्ग प्रशस्त करते हैं।
दे रहे वो ये शिक्षा अपने व्यवहार से, अपने श्री वचनों से।
तो आओ हम ऐसे महान गुरु को नमन करें, शत् शत् प्रणाम करें जो नारी जाति के उत्थान के लिए समर्पित हैं।
कर रहे हैं वो शतचण्डी महायज्ञ 13 वर्षों से लगातार शक्ति के आवाहन के लिए।
जमा रहे हैं सिक्का कन्याओं के दैवी स्त्रोत होने का ताकि कोई अपनी कन्या को मारे नहीं, दुतकारे नहीं, अशिक्षित न रखे।
जागना आपको है, सीखना आपको है क्योंकि अपने दैवी स्वरूप को जानते हुए, पहचानते हुए असीम सुख शान्ति और प्रसन्नता आपको पानी है।

एक स्त्री की कहानी

मैं एक स्त्री हूँ। लोग देवी मान कर मेरी पूजा करते हैं। पर क्या यही मेरी सच्ची कहानी है?

क्या मैं ईश्वर हूँ? जगत माँ हूँ? मैं क्या हूँ?
अनेक पुराणों में, ग्रन्थों में स्त्री को हेय लिखा गया है। परन्तु अनेक संतो ने स्त्री को शक्ति भी लिखा है। कौन सा रूप मानूँ मैं? कौन सा सत्य मानूँ मैं?
पग पग पर दुनिया मुझे गिराए, लाँछन लगाए।
पग पग पर आदमी मुझे नीचा दिखाने का प्रयास करे!
क्यों? क्योंकि उसका अहम् उसे उकसाए।
आखिर दूसरे को गिरा कर ही तो वह स्वयं को ऊँचा समझ पाए।।
पर मैं पूछती हूँ कि आखिर सच क्या है? हे ईश्वर तूने किसलिए मुझे गढ़ा है?
क्या केवल पुरुष के अहंकार की तृप्ति के लिए? या अन्यथा कोई और उद्देश्य है मेरा इस धरा पर?
जिन ग्रन्थों, धर्मों ने स्त्री को गिराया है, उन्हीं में स्त्री के विदुषी और सन्त होने का भी जिक्र आया है।
राम ने शबरी को तारा और नवधा भक्ति का उपदेश दिया।
कृष्ण ने राधा को अपनी शक्ति बनाया और अपने से पहले उसका नाम लगाया।।
शक्ति के बिना शिव शव हैं, ये आदि शंकराचार्य ने गाया।
प्रत्येक मंदिर, गिरिजे में स्त्री को शक्ति, माँ के रूप में पूजा जाता है।
अरे मानव, फिर भी तू भूला है। भटका है। दिन रात अपने अहम् को पोसता है।
स्त्री ईश्वर की दिव्य कृति है। जो कभी पत्नी, कभी जननी और कभी बेटी है।।
उसका सम्मान कर अपने अहंकार का विनाश कर। उसके अस्तित्व को स्वीकार कर।

अस्तित्व

ढूढ़ँती हूँ मैं अस्तित्व अपना, उन खोई हुई गलियों में।
ढूढँती हूँ मैं अस्तित्व अपना, उन खोई हुई कलियों में।
थी बचपन में मैं एक स्वतंत्र तितली, जो बागान में उड़ती फिरती थी। बागान में उड़ती फिरती थी, ताजी हवा की महक और आनन्द में ही दिन रात डूबती उतरती थी।
समझती थी भूल में अपनी कि जीवन एक सतत आनन्द की धारा है। क्या जानती थी दुनिया के छल कपट और धोखे को?
बचपन बीता आई युवावस्था। परिचय हुआ मेरा छोटे स्तर पर लोगों के रूप से अन्यथा।
प्रत्येक ऐसे अनुभव से अन्दर तक हैरान मैं हो जाती। पूछती बार बार स्वयं से, क्यों

लोग इतना धोखा करते हैं ?
धोखा करने के बाद उस पर कितनी सफाई से झूठ की काली चादर को सफेद बना कर ढक देते हैं ।
अनेकों बार स्वयं भी धोखा देने की सोचती; परन्तु चाह कर भी बुद्धि साथ नहीं देती ।
यही सिलसिला है जारी मेरे प्रौढ़ होने तक भी । आज भी इन्सान के अन्दर मैं झाँक नहीं पाती ।
समझ पाती हूँ अनेकों की फितरत, धोखा खाने के पश्चात् ही ।
विश्वास, मेरे स्वभाव का अंग है, उसको मैं छोड़ नहीं पाती ।
दिन रात कलपती, व्यथित होती । प्रभु से उल्टी बुद्धि की प्रार्थना करती ।
तब एक सद्गुरु ने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा । उनके आने से मैंने जाना कि मेरा अस्तित्व क्या है ?
उनकी शिक्षाओं में मुझे दिखा ईश्वर का एक ऐसा रूप जो एकदम वास्तविक है ।
तब मैं समझ पाई अपने गुणों और अवगुणों को । उँगली पकड़ कर उन्होंने मुझे न केवल चलना सिखाया अपितु दौड़ना भी सिखा दिया ।
उनके प्रोत्साहन से मुझे अपने अस्तित्व पर गर्व हुआ ।
अभिमान नहीं, जाग उठा मेरा स्वाभिमान । बन सकी हूँ मैं एक संपूर्ण नारी जिसका एक पृथक अस्तित्व है ।
उनके निरन्तर प्रोत्साहन ने मेरे डगमगाते कदमों को सहारा दिया ।
न केवल सहारा दिया अपितु एक दृढ़ संबल प्रदान किया ।
आज नारी होने पर मुझे गर्व है । आज अपने अस्तित्व के द्वारा मैं अन्य नारियों को प्रेरित करना चाहती हूँ ।
मत डूबो इन स्वनिर्मित कल्पनाओं में कि मैं पुरुष से कमजोर हूँ ।
इनमें से अधिकतर कल्पनाएँ पुरुषों द्वारा नारी पर रोपी गई हैं ।
अपने स्वार्थ के लिए, अपने अहम् का पोषण करने के लिए कुछ पुरुषों ने नारी को हेय ठहराया है ।
नहीं है नारी हेय किसी भी दृष्टि से । इस वाक्य को बार बार मन में दोहराओ ।
तोड़ो स्वनिर्मित बन्धनों और जाल को । एक मुक्त पंछी की तरह निरभ्र आकाश में अपने पंख फैलाओ ।
परमहंस स्वामी सत्यानंद ये संदेश दे रहे । नारी पुरुष से बेहतर है ।
अपने वचनों और कृत्यों से नारियों के उत्थान का भरसक प्रयत्न कर रहे ।
बनो तुम दुर्गा, चण्डी और सरस्वती । बनो तुम एक ऊर्जा और शक्ति का स्त्रोत ।

है शक्ति तुम्हारे भीतर ही उसको जानो, पहचानो । अपने अस्तित्व की खोज करो और उसमें स्थित होओ ।
तभी होगा जीवन तुम्हारा सार्थक । प्रसन्न तुम रह पाओगी । अपनी प्रसन्नता और आनन्द को जन–जन तक फैला पाओगी ।
प्रभु आएँगे, तुम्हें अपना माध्यम बनाएँगें । तुमसे बड़े बड़े काम करवाएँगे ।
हो जाएँगें चकित पुरुष, जब प्रभु तुम पर अपनी कृपा बरसाएँगें ।
नारी नीचे इसलिए नहीं कि वह हेय है, वह कमजोर है ।
नारी नीचे आज इसलिए है कि उसे बचपन से दबाया गया है ।
जिस रोज वह अपने गुणों से जुड़ेगी, जगत में आश्चर्य जनक काम करेगी ।

एक स्त्री की व्यथा

पुरुष प्रधान इस समाज में, नारी को हेय समझा जाता है ।
पग पग पर पुरुष स्वयं को श्रेष्ठ समझते हुए, अपने अहंकार का पोषण करता है ।।
घर गृहस्थी के समस्त निर्णय पुरुष स्वयं अकेले ले लेता है । अग्नि के सामने वचन देने के बावजूद, नारी को अपनी दासी समझता है ।
नारी भोग्या है, नारी उसके बस में है, इसका अहसास उसे पल पल कराता है ।
नारी के गुणों को औरों के सामने बखानता है, परन्तु एकान्त में अपना ही वर्चस्व जमाता है ।।
नारी को घर की धुरी कहा जाता है । परन्तु पुरुष उस धुरी को अपने हाथ में रखना चाहता है ।।
यदि पुरुष को कोई रोग है तो नारी का फर्ज़ है कि उसकी तन, मन और धन से सेवा करे ।
परन्तु यदि नारी को कोई रोग है, तो सेवा करने के लिए पुरुष को श्रेष्ठ समझा जाता है ।।
पुरुषों के इस समाज में, पुरुष तो क्या नारी भी नारी को नीचे गिराने से नहीं चूकती ।
यदि ऐसा न होता तो क्या सास, बहू की हिमायती न होती ?
जब बहू बीमार होती है लम्बे समय के लिए, तो सास चाहती है कि बेटा दूसरा विवाह कर ले ।
जब बेटा बीमार होता है लम्बे समय के लिए, तो सास चाहती है कि बहू अपना जीवन उस पर न्यौछावर कर दे ।।
क्यों ? और आखिर ऐसा क्यों ?

क्या स्त्री में उस ईश्वर का अंश नहीं है, जो पुरुष में है ?
क्या स्त्री तन, मन, धन से परिवार की सेवा नहीं करती है ?
विधवा होने से स्त्री स्वतः ही बच्चों का दायित्व संभालती है।
विधुर होने से पुरुष शीघ्र ही दूसरा विवाह कर लेता है।
जूझती है अनेक मुसीबतों से स्त्री, पति के माँ–बाप, भाई, बहन के साथ तालमेल बिठाती है।
और पुरुष ! पग पग पर उस पर शक करते हुए, अपने अहंकार का पोषण करता है।।
स्त्री माँ, बहन, बेटी और पत्नी होती है।
पग पग पर कभी बेटे, कभी भाई और कभी पति से प्रताड़ित होती है।।
आर्थिक रूप से स्वंतत्र होते हुए भी, उसको पुरुष अधिकार देना नहीं चाहता।
डरता है, कमजोर है क्योंकि अन्दर से।।
कमजोर है अन्दर से, इसलिए बाहर से क्रोध करता है।
प्यार से नहीं, रोब से स्त्री को बस में करना चाहता है।।
पर ऊपर वाले के रहते, स्त्री पर अधिक समय तक कोई अत्याचार कर नहीं सकता।
स्त्री की भावुकता उसकी कमजोरी नहीं, उसका हथियार है।।
जब उसकी भावना ईश्वर की ओर मुड़ती है, तो प्रभु उसे मालामाल करता है।
भावना ईश्वर की ओर मुड़ना ही भक्ति है।
सांसारिक सहारे झूठे हैं, जब ये स्त्री जान जाती है।
तब वह इस संसार के मायाजाल को तोड़ने में समर्थ होती है।।
स्त्रियाँ, पुरुषों से अध्यात्म में बेहतर प्रगति करती हैं।
उनकी भावना ही उनका हथियार बनती है।।
मेरा आह्वान है स्त्रियों को, संसार में रहो, परिवार में रहो,
सबकी तन, मन से सेवा करो, परन्तु अपनी भावना प्रभु के चरणों में लगाओ।
जिस दिन तुम यह कर पाओगी, अपने छिपे हुए गुणों को पहचान जाओगी, उसी दिन तुम गुलामी की इन जंजीरों को तोड़ पाओगी।।
दुःख सहो, पर उसे अपनी शक्ति बढ़ाने का साधन समझो।
प्यार करो, पर उसे केवल अपना एक कर्त्तव्य समझो।
ईश्वर से जुड़ो, ईश्वर को चाहो, जिसमें भी तुम्हारी श्रद्धा है उसको पूजो।
सेवा करो निःस्वार्थ भाव से, दान दो दोनों हाथ से।
बिना किसी बदले की आशा से यदि तुम यह कर पाओगी, तो स्वयं ही ईश कृपा की

अधिकारी बन जाओगी।।
निकलो, संसार की इस भूल भूलैया से।
क्यों उलझी हो तुम इन संसार के काँटों में?
क्रोध, तनाव और चिन्ता का दामन जब तुम छोड़ सकोगी। तब तुम अपने दिव्य रूप को पहचान सकोगी।।
जिस दिन ऐसा होगा, तुम्हारा जीवन दिव्य होगा।
एक ऐसा सद्गुरु तुम्हें मिलेगा, जो तुम्हारी कद्र करेगा। पग पग पर तुम्हारी आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करेगा।।
प्रभु तो दोनों हाथ फैलाए तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। केवल तुम्हें अपनी जंजीरों को तोड़ना है।।
भागना नहीं है, केवल जागना है। अधिकार के लिए लड़ना नहीं है, अधिकार के काबिल बनना है।।
जब तुम काबिल बनोगी, प्रभु कृपा स्वयं ही तुम पर बरसेगी। और तब ये दुनिया स्वयं ही तुम पर न्यौछावर होगी।।
केवल सच्चा बनना है। सरल बनना है। और अपनी भावना को प्रभु से जोड़ना है।।
यही अन्तिम सत्य है। और सरलतम रास्ता है।।

नारी– एक सृजनकर्त्री

है कहाँ पुरुष के पास वो हृदय, जो ईश्वर ने नारी को दिया है?
है कहाँ पिता के पास वो ममता, जो ईश्वर ने माता को दी है।
बच्चे को खाँसी होती है तो माँ का कलेजा काँप उठता है।
बच्चा रोता है तो माँ की आँखों से आँसू निकल आते है।
बच्चा भूखा होता है तो माँ के गले में रोटी नहीं उतरती है।
सह जाती है नारी बच्चे के लिए सब दुःख, पर जीवन उसका बना देती है।
होती है जवानी में गर विधवा, तो भी बच्चों को पूर्ण स्नेह से पालती है।
नहीं करती है विवाह दूसरा, चाहे लाखों दुःख और मुसीबतें झेलती है।
कहाँ मिलता है ऐसा त्याग विधुरों में? चिता की राख ठंडी होते तक दूसरे विवाह का प्रबंध करते हैं।
आखिर पुरुष को बाहर जाना है, घर परिवार कैसे संभालेगा ?
आदि–आदि बहाने उसके घर परिवार वाले देते हैं।
क्या विधवा नारी घर और बाहर दोनों को नहीं संभालती?

नारी ही सृजन करती है। 9 महीने बच्चे को पेट में रखती है।
सींचती है उसको अपने खून से, उफ तक नहीं करती है।
लुटा देती है अपने संपूर्ण स्नेह और ममता को बच्चे की एक मुस्कान पर।
कहाँ है पुरुष में इतना निःस्वार्थ भाव, जितना नारी में होता है।
सोती है खुद गीले में, बच्चे को सूखे में सुलाती है।
कहाँ है इतनी करुणा पुरुष में, जितनी नारी में होती है।
सहती है जुल्म अनेक, धरती की तरह सहनशील होती है।
अपने शुभकर्मों से एक सुपरिवार की संरचना करती है।
होती है वह प्रथम गुरु अपने बच्चों की, अच्छे संस्कारों से उसे पोषित करती है।
तभी तो राम, कृष्ण जैसे अवतारों को जन्म देती है।
दिया विधाता ने है उसको सृजन का सौभाग्य। फिर क्यों पुनः पुनः नारी छली जाती है?
समझा जाता है हीन उसे, यद्यपि जन्मदात्री वह होती है।
कहें इसे संकीर्ण मानसिकता अथवा अज्ञान, प्रत्येक नारी शक्ति स्वरूप होती है।
मेरा दावा है उन कथाकारों से, इतिहासकारों से, क्या वे कृतघ्न नहीं?
भूल गए वे अपनी जन्मदात्री को, जब उन्होंने नारी को हेय कहा!
नारी है तो सृष्टि है। नारी है तो पुरुष है। नारी है तो गृहस्थी है! नारी है तो पुरुष पूर्ण है।
अन्यथा वह बनेगा योगी अथवा संन्यासी। कौन पालेगा उसे? कौन देगा उसे दक्षिणा?

स्त्री

माँ एक जननी होती है, माँ एक सृष्टिकत्री होती है।
फिर उस माँ का निरादर कौन करें? जो भी उस माँ का निरादर करे वह अनन्त पापों का भागी बनें।
नहीं चुका सकता पुरुष नारी के अहसान अनेक जन्मों में भी।
क्योंकि कभी माँ के रूप में, कभी बहन के रूप में और कभी बेटी के रूप में, भरती है पुरुष को नारी अपने स्नेह से।
स्नेह और ममता तो स्त्री को ईश्वर का वरदान है।
जो स्त्री आंतरिक, नैसर्गिक स्नेह से रिक्त है, वह इस धरा पर एक अभिशाप है।
करती है प्रकृति इस संपूर्ण विश्व का पालन इस धरा के रूप में।

सहती है अनेकों जुल्म और अत्याचार जब खोदी जाती है। ढोती है अनेक पापियों को, पर कभी उफ तक न करती है।
धरा की भाँति ही स्त्री असीम सहनशील होती है।
सहती है अत्याचारों को अपनी क्षमता से अधिक, कभी उफ तक न करती है।
मानव को चाहिए कि स्त्री का सम्मान करे। ईश्वर की इस अद्वितीय, अनुपमकृति का आदर करे।
धन्यवाद दे तहे दिल से उस सर्व नियंता को, जिसने स्त्री के रूप में सौम्यता, सुन्दरता और मनोहरता का उपहार पुरुष वर्ग को दिया है।
रह जाता है शिव भी अधूरा, अपूर्ण शक्ति के बिना, फिर साधारण पुरुष की क्या औकात?
करती है एक स्त्री भरण पोषण संन्यासी का भी उसको भिक्षा दे कर।
है स्त्री के कारण धरा पर जन्मे राम, कृष्ण और गुरुनानक।
स्त्री आई ही है पृथ्वी पर परोपकार के लिए।
करती है संचित अनेक पुण्य अपनी झोली में और दौलत अपनी सेवा, स्नेह और प्यार की सहज ही लुटाती है।
कभी माँ बनकर सींचती है पुरुष को अपने रक्त से तो कभी पत्नी बनकर उसको सब सुख देती है।
ऐसी अनुपम कृति का जो अपमान करता है, वह ईश्वर की कृपा से सदैव वंचित ही रह जाता है। ऐ मानव गर प्राप्त करनी है तुझे ईश कृपा तो अपना नजरिया बदल।
अपने अहंकार को छोड़कर अपनी माँ, बहन और पत्नी का सम्मान कर।
मत दे दुःख तू उसको क्योंकि एक धार्मिक स्त्री तेरे निर्वाण का पथ प्रशस्त कर सकती है।
स्त्री किसी दृष्टि से पुरुष से हेय नहीं, फिर क्यों धर्म के ठेकेदारों ने उसे हेय ठहराया है?
बड़े बड़े सन्तों ने स्त्री को देवी की तरह पूजा है और उसे वृहद शक्ति का स्त्रोत बताया है।
जिसके पास है बुद्धि वो अपने घर में स्त्री को ही उस रूप में पूजता है और इस जन्म में ही अनन्त सुख और शान्ति का अनुभव करता है।

क्यों समझा जाता है नारी को कमजोर?

क्यों समझा जाता है नारी को कमजोर?

क्या शारीरिक शक्ति ही सर्वोपरि है ?
एक नारी पढ़ती है तो पूरे परिवार को शिक्षित करती है ।
डालती है संस्कार अपने बच्चों में, एक नवजीवन का सृजन करती है ।
अपने धैर्य और सहनशक्ति से अपने बच्चों को धैर्य का पाठ पढ़ाती है ।
करती है राज अनेक दिलों पर अपने स्नेह के अस्त्र से ।
यद्यपि अनेकों बार दुतकारी जाती है फिर भी मानसिक रूप से सशक्त रहती है ।
अपने आत्म विश्वास से अनेकों का आत्मविश्वास बढ़ाती है ।
फिर क्यों नारी को कमजोर समझा जाता है ?
क्यों लगाए जाते हैं प्रश्न चिन्ह उसके निर्णयों पर ?
यदि उपयुक्त अवसर दिए जाते हैं तो नारी पुरुषों से बेहतर काम करके दिखा सकती है क्योंकि निःस्वार्थता, लगन आदि गुण उसमें कूट–कूटकर भरे रहते हैं ।
करती है हर काम वह पूरी ईमानदारी (Sincerety) से, अतः सफलता हर क्षेत्र में कदम उसके चूमती है ।
ईश्वर ने भरा है नारी को एक अद्वितीय शक्ति से ।
जिस दिन वो जाग जाएगी अपनी ऊर्जा से संपूर्ण विश्व को आप्लावित करेगी ।
करेगी काम ऐसे इस धरा पर कि मर कर भी वो अमर हो जाएगी ।
है रूप वो शक्ति का, दुर्गा का, सरस्वती का ।
है शक्ति अनन्त उसके अन्तर में । केवल उसको जागना है । सजग बनना है ।
अपने अन्तःकरण से जुड़ना है और असीम सुख, शान्ति और प्रसन्नता का अनुभव करना है ।
असीम सुख शान्ति अनुभव करते हुए, अनेकों को सुख और शान्ति प्राप्त करने का मार्ग बताना है ।
न समझे नारी स्वयं को कमजोर और हीन ।
है आज आवश्यकता उसको अपना खोया हुआ आत्मविश्वास जाग्रत करने की ।
बन सकती है वह एक मशाल अनेकों का पथ प्रशस्त करने के लिए ।
ईश्वर ने उसे एक विशेष उद्देश्य के लिए गढ़ा है, इस धरा पर भेजा है ।
है उसमें शक्ति और सौम्यता का ऐसा सम्मिश्रण जो उसे आश्चर्यजनक उपलब्धियाँ करवा सकता है ।
अतः मेरा समस्त नारी शक्ति को आह्वान है कि वो जागे और अपने कर्तव्यों को निभाते हुए एक दिव्य मार्ग का चयन करे ।

बने वो मार्ग दर्शक अपने उदाहरण से ।
बने वो आदर्श अपने चरित्र की गरिमा से । बने वो नेत्री अपने अन्दर की शक्ति से ।
न करे वो सीमित स्वयं को केवल अपने परिवार तक ।
परिवार में रहते हुए, अपने कर्तव्य निभाते हुए भी वह अपना उत्थान करते हुए, अनेकों का उत्थान कर सकती है ।
आवश्यकता है जागने की, सजग होने की ।
है हिम्मत जिसमें वो अवश्यमेव ही ऐसा कर पाएगी ।
मेरी ही तरह घर गृहस्थी में रहते हुए अपने परिवार के साथ साथ अनेकों का उद्धार कर पाएगी ।
चुनना उसे है, गुमनामी के अंधेरे अथवा ईश्वर की असीम कृपा ।
चुनना उसे है, अन्दर की हीनता और दुःख अथवा असीमित आत्मविश्वास और असीम सुख ।

नारी और हीनता

पुरुषों के समाज में नारी को हीन समझा जाता है । पुरुषों के समाज में नारी को दबा कर रखा जाता है ।
कोई तो एक ऐसा हो जो नारी की नैसर्गिक योग्यताओं का मूल्यांकन करे ।
कोई तो एक ऐसा हो जो नारी के उत्थान का प्रयत्न करे ।
नारी को ईश्वर ने भरा है अद्वितीय, अनुपम ममता से ।
ममता जो पूर्णतया निःस्वार्थ होती है । एक माँ स्वयं भूखी रहकर भी अपने बच्चे का पेट भरती है ।
माँ बच्चे की पहली गुरु होती है । ज्ञान का बीज उसके अन्दर डालती है ।
अपने रक्त से उस नन्हें पौधे को सींचती है । पुष्पित, पल्लवित होते देखती है ।
सहन करती सब अत्याचार दूसरों के, पर बच्चे को अपने, आपदाओं से बचाती है ।
सच्चाई की राह पर चलने के बावजूद, अपने बच्चे लिए जग से झूठ भी बोल जाती है ।
नारी में ईश्वर ने असीम धैर्य और सहनशक्ति का समावेश किया है ।
नारी मानसिक रूप से पुरुषों से कहीं अधिक शक्तिशाली होती है ।
होता है जीवन नारी का समर्पित अपने परिवार को । तन, मन और धन से वह अपने परिवार की सेवा करती है ।
पर कितने दुःख की बात है कि उसको पैरों की जूती समझा जाता है ।
पर कितने आश्चर्य की बात है कि कई बार वह भी स्वयं को हीन समझने लगती है ।

नारी, नारी की ही बहुत बार सबसे बड़ी दुशमन होती है।
तभी तो एक सास अपनी बहू की माँ नहीं बन पाती है।
नहीं बन पाती है बहू, बेटी अपनी सास की और उसको अनेकों बार शक की दृष्टि से ही देखती है।
आज समय आया है कि नारी जागे। स्वयं को पहचाने।
अपने अस्तित्व से हीनता, दुर्बलता और ईर्ष्या के समस्त अवगुणों का निराकरण करे।
परिवार में रहे, सेवा करे परन्तु अपने अस्तित्व को न भूले।
वह है ईश्वर का एक दिव्य अंश, इस सत्य को सदा याद रखे।
नारी गर धर्म की राह पर चलती है तो समस्त परिवार की समर्थ मार्गदर्शक बनती है।
अपने साथ साथ वह बच्चों और पति को भी श्रद्धा और विश्वास के दिव्य गुणों से भरती है।
होती है वह धुरी धर्म की, गर एक नेक राह पर वह चलती है।
नारी को चाहिए कि वह अपनी गरिमा को बनाए रखे।
सेवा करते–करते अपने स्वाभिमान को बचाए रखे।
अपने नारीत्व का वह सम्मान करे। पूरे विश्व को ही अपना परिवार समझे।
लुटाए अपनी ममता सब पर, खास कर निर्धनों और जरूरतमंदों पर।
गर एक भी निर्धन बच्चे को वह अपना समझ पाएगी तो अपना उद्धार कर पाएगी।
पाएगी वह असीम सुख और प्रसन्नता अपने अन्तर की गर निःस्वार्थ रह पाएगी।
निर्धन बच्चों पर जब वह अपना प्यार लुटाएगी तो उसकी आत्मा एक दिव्य आलोक से भर जाएगी।
उन बच्चों को एक नेक राह दिखाए पर उनको एक दिव्य आत्मा समझे और उनसे कुछ उम्मीद न करे।
जिस प्रकार एक पक्षी, पंख निकल आने पर अपने बच्चों को उड़ा देता है।
उसी प्रकार वह परायी अमानत जानकर अपने तथा दूसरे बच्चों को संस्कारों से भरे।
करे वह संस्कारों की खेती, बीज जिसमें सदाचार के हों।
जब नेकी की फसल उगेगी, तो पल पल उसकी आत्मा तृप्त होगी।
पाएगी वह उपहार दिव्य, उस परमपिता परमेश्वर से।
जीवन होगा उसका सार्थक उस ईश्वर के अनुभव से।
पल पल महकेगी वह अपने आत्मानुभव से। औरों को भी महकाएगी अपनी बगिया के फूलों से।

मैं भी एक नारी हूँ। नारी कहीं न कहीं भीतर से अक्सर अपूर्णता का अनुभव प्रतिक्षण करती है।
गर चुनती है वह राह परमार्थ की, तो सरलता से उस खालीपन को एक दिव्यता से भर पाती है।
ये बात मैं अपने अनुभव से दावे के साथ कहती हूँ।
चाहो तो प्रयोग करो। साहसी बनो। अपने अनुभव से ही मेरे कथन की सत्यता को परखो।
अपना जीवन यूँ व्यर्थ न गँवाओ। समय बीतता जा रहा।
प्रत्येक क्षण बहुमूल्य है। विषाद की कालिमा को स्वयं अपने हाथों से हटाओ।
अपने लिए दिव्य राह का चयन करो। अपने परिवार की संकीर्णता के दायरे को तोड़ो।
पाओ उस आनन्द को जिसकी तुम अधिकारिणी हो।
क्योंकि ईश्वर ने तुमको दिव्य शक्तियों से भरा है।
बनो तुम दुर्गा और सरस्वती। भरो शक्ति और भक्ति अनेकों में।
काली बनकर दुष्टों का नाश करो। अपनी शक्ति को पहचानो और अपना जीवन धन्य करो।

<u>परमहंस स्वामी सत्यानंद के सत्संग से</u>

मासिक धर्म और पूजा

मासिक धर्म स्त्री के जीवनकाल में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई जातियों में कन्या के युवती होने पर इसे उत्सव के रूप में मनाया जाता है। लगभग 30 वर्ष तक प्रत्येक माह 3–5 दिन तक स्त्री को मासिक धर्म का आवश्यक कृत्य करना पड़ता है। मेडिकल साईंस इसको अत्यधिक महत्वपूर्ण बताती है। शरीर रूपी फैक्ट्री की पूरी ओवर हालिंग मासिक धर्म में होती है। स्त्री के शरीर के जिस भाग में बच्चे का निर्माण होता है उसकी पूरी प्राकृतिक तरीके से सफाई स्वतः होती है।

इस वर्ष सन् 2008 के शतचण्डी यज्ञ में स्वामी सत्यानंद ने कहा कि मानसिक दृष्टि से, सफाई की दृष्टि से अगर देखा जाए तो ठीक है, परन्तु इसके लिए स्त्री को पूजा के अधिकार से वंचित किया जाए, ये सही नहीं है। जिस यूनिट में कोई राम जन्म लेता है, कोई कृष्ण जन्म लेता है, प्रकृति उसकी हर माह सफाई करती है। अब भला इसका पूजा से क्या सम्बन्ध ? हम तो मार्ग शीर्ष माह में योग पूर्णिमा में कन्याओं से ही सारी पूजा करवाएँगें। भगवान अगर नाराज होते हैं तो हमको फोन

(SMS) कर दें। उनके पास हमारा मोबाईल नम्बर है। अब तो भगवान और हमारे बीच में कोई झंझट ही नहीं है। हमारे पास उनका मोबाइल नम्बर नहीं है, अतः हम स्पीड पोस्ट से सन्देश भेज देते हैं। भगवान तो हम सबके एकदम पास ही रहता है, अतः उसको सब पता रहता है कि हमें क्या चाहिए। हम समझते हैं कि वो नहीं जानता और तरह तरह के कर्मकाण्ड करते हैं उसको प्रसन्न करने के लिए। बिहार योग विश्वविद्यालय, मुंगेर द्वारा प्रकाशित नव–योगिनी तंत्र में तो यहाँ तक लिखा है कि मासिक धर्म के दिनों में जप करने से स्त्रियों को बहुत अधिक आध्यात्मिक लाभ मिलता है। ईश्वर का स्मरण तो आत्मा का विषय है। हम उसको शरीर के साथ क्यों इतना अधिक जोड़ते हैं?

आज भी स्त्री को इन दिनों में समाज में फैले हुए अंधविश्वास के कारण, मंदिरों और पूजाओं में प्रवेश नहीं करने दिया जाता। श्री स्वामी जी की यह शिक्षा सुन कर मुझे बहुत अच्छा लगा। यद्यपि मैं स्वामी देवशंकरानंद जी की कृपा से ये वहम् पहले ही छोड़ चुकी थी, परन्तु अन्य स्त्रियाँ भी इस अंधविश्वास से मुक्ति पाएँ, ऐसा मैं चाहती हूँ। स्त्री मासिक धर्म को सहज रूप से स्वीकार करते हुए अपने जीवन को पूर्णता से जी सकती है। फिर इसके कारण कैसा तनाव? और कैसी कुंठा?

डर और स्त्री

मैं एक स्त्री हूँ। स्त्रियों को बचपन से डर के साये में जीना सिखाया जाता है। कभी पिता का डर, तो कभी भाई का डर या कभी जमाने का डर। मैं इस मामले में बहुत भाग्यशाली रही क्योंकि मेरी माँ ने मुझे कभी नहीं डराया। अपने लाड़, प्यार के साथ–साथ, उन्होंने मुझे उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। हमेशा मेरी अंतर्निहित योग्यता को चमकाने के लिए, शिक्षा के उचित अवसर प्रदान करने में एक वृहद् भूमिका निभाई। आज से 45 वर्ष पहले स्त्रियों की शिक्षा को गौण समझा जाता था। मैं अपनी कक्षा में सदा प्रथम या द्वितीय स्थान प्राप्त करती थी। पढ़ाई में मेरा खूब मन लगता था। अपने पिताजी को अक्सर कहते हुए सुनती, ''अरे ये इतना पढ़ती है कहीं पागल न हो जाए। हमें कौन सा इससे नौकरी करवानी है?'' परन्तु माँ ने हमेशा मुझे मेरे भाइयों के समान ही शिक्षा के अवसर दिलवाए। अपने बाल्यकाल में मैंने कई छात्रवृत्तियाँ और गोल्ड मेडल अर्जित किए, जिन पर मेरे पूरे परिवार को गर्व था।

आज पीछे मुड़ कर देखती हूँ तो समझ पाती हूँ कि निडरता का बीज मेरी माँ ने मेरे व्यक्तित्व में इतना गहरा रोपित किया कि उसी की वजह से आज मैं इतना बड़ा सेवा का कार्य कर पा रही हूँ। उन्होंने ईश्वर के विश्वास की गहरी नींव डालकर

मुझे श्रद्धा और विश्वास का अनमोल उपहार दिया। उम्र के इस मोड़ पर आ कर मैं समझ पाती हूँ, कि क्यों मेरे आत्मविश्वास की जड़ें इतनी गहरी हैं। आधुनिक युग में तो लड़कियों को भी लड़कों की तरह ही पाला जा रहा है। मेरा निवेदन है समस्त मातृशक्ति से कि वो अपनी लड़कियों को निडरता का उपहार प्रदान करें। ''डरना एक पाप है।''– **स्वामी विवेकानन्द**

स्वामी विवेकानन्द ने सबको निडर बनने का आह्वान किया था। निडरता का अर्थ उच्छृंखलता से कदापि न लगाया जाए। संसार में रहते हुए, बड़ों का सम्मान करते हुए, अपनी मर्यादाओं का पालन करते हुए, स्त्री सहज ही एक सम्मानित जीवन व्यतीत कर सकती है।

अब क्यों डरूँ जमाने से मैं?

अब डर नहीं लगता जमाने से मुझे क्योंकि मैं जान चुकी हूँ कि ये जमाना केवल अपने मतलब की बात करता है।

अपने मतलब की बात करता है और अपने पैमाने से ही मुझे तौलता है।

चाहता है मुझसे अपने मन की करवाना, मेरी भलाई के बारे में सुनना भी नहीं चाहता है।

अब भला जब मैं जान चुकी कि जमाने को मैं कभी भी खुश नहीं कर सकती तो फिर मैं क्यों न जमाने से दूर रहूँ?

देख पाती हूँ अब निरर्थकता जमाने की इन खोखली बातों में।

चाहती हूँ अब संसार में रहूँ पर जमाने की लीक से हट कर चलूँ।

चाहती हूँ अब संसार में रहूँ पर जमाने की निरर्थक बातों को न मानूँ।

चाहती हूँ अब संसार में रहूँ पर अपने गुरु की आज्ञाओं का पालन करूँ।

गुरु कहते हैं सेवा करो और अपने आप को जानते हुए, शुद्ध करते हुए, उस ईश्वर का अनुभव करो।

गुरु कहते हैं कि है तुम्हारे अन्दर अनन्त शक्ति, उसको जाग्रत करो।

गुरु कहते हैं कि गरीबों, दुखियों और दीनों को प्यार करो, उनमें ईश्वर का ही रूप देखो।

गुरु कहते हैं कि जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसे दूसरों के साथ बाँटो।

मुझे गुरु की आज्ञा पालन करने से सतत सुख और शान्ति का अनुभव होता है।

मुझे गुरु की आज्ञा पालन करने से अपने अन्दर के ईश्वर का अनुभव होता है।

तुलना कर पाती हूँ मैं अब जमाने और गुरु के वाक्यों में, अपने स्वयं के अनुभव से।

हर दृष्टि से मुझे गुरु की आज्ञा पालन करना फायदे का सौदा लगता है।
गुरु की आज्ञा पालन करने से मेरा डर धीरे–धीरे दूर होता जा रहा।
जान रही हूँ मैं स्वयं को। पहचान रही हूँ मैं अपने अन्दर के स्वरूप को।
ईश्वर तो अन्दर की सच्चाई और अच्छाई देखता है।
ईश्वर तो अन्दर की सच्चाई और अच्छाई से प्रसन्न होता है।
लुटा देता है ईश्वर अपनी कृपा; दया, करुणा, सेवा और प्यार करने वाले पर।
जिस दिन अनुभव आता है ये संसार सब धूमिल हो जाता है।
अब जी चाहता है सेवा, प्यार और दान करती रहूँ, दिन–रात उस रस को पीती रहूँ, जो ईश्वर अपनी कृपा कर बरसाता है।
जमाना तो जैसा पहले था, अब भी वैसा ही है और वैसा ही रहेगा।
फिर मैं क्यों जमाने से डरूँ? मेरा अपना एक अलग व्यक्तित्व है।
संसार में रहते हुए, अपने कर्तव्यों को निभाते हुए, जी चाहता है गुरु के श्री चरणों में समर्पण करूँ।
समर्पण करूँ गुरु के श्री चरणों में क्योंकि उनकी आज्ञा पालन करने में मुझे अपना फायदा नजर आता है।
देख पाती हूँ जब ऐसा अपने अनुभव से तो उनके श्री चरणों में ये सिर स्वयं ही नतमस्तक होता है।

शिक्षा और नारी

शिक्षा ही नारी को करेगी पूर्णरूपेण स्वतंत्र। शिक्षा से ही नारी तोड़ पाएगी सब बंधन।
बंधन जो समाज ने उस पर थोपे हैं। बंधन जो रूढ़िवादियों ने उस पर थोपे हैं।
तोड़ पाएगी वह उन सब जंजीरों को, जिन्होंने उसको निरन्तर जकड़ा है।
निकल पाएगी वह उस जाल से, जो मकड़ी की तरह उसने अपने चारों तरफ स्वयं बुना है।
नारी जिस दिन अपने दिव्य स्वरूप को जान जाएगी। वह एक उन्मुक्त पक्षी है यह जान जाएगी।।
उड़ान भरेगी वह अनन्त गगन में, अपने आत्मबल से अपनी एक अलग पहचान बनाएगी।
आत्मबल से ईश्वर ने उसको कूट–कूट कर भरा है।
सहनशीलता, उसमें पुरुषों से कहीं अधिक है। ममता उसकी कमजोरी तब नहीं बनेगी जब वह प्रत्येक जीव को असीम स्नेह करेगी। प्रत्येक बच्चे को दिखाएगी वह

एक दिव्य राह। करेगी वह एक दिव्य भविष्य का पथ प्रशस्त। अपने स्व को जानते हुए, पहचानते हुए वह बच्चों को स्व से जुड़ने की कला सिखा पाएगी। बनेगी वह मदालसा, जिसने अपने बच्चों को आत्मज्ञान घुट्टी में पिलाया।
माँ कितनी शक्तिशाली है, ये अहसास उसने पूरे जग को कराया।
मेरी इल्तज़ा है नारियों से कि वे अपनी शक्ति को न भूलें।
बार–बार खोजें। स्वयं से पूछें कि मैं क्यों इस धरा पर आई?
क्या मैं केवल और केवल पुरुष के भोग विलास का साधन हूँ?
क्या मैं केवल और केवल बच्चे पैदा करने की एक मशीन हूँ?
आज आवश्यकता है कि वह पुनः अपनी शक्ति को जाने, पहचाने।
वह शिव की शक्ति है। वह कृष्ण की राधा के रूप में आह्लादिनी शक्ति है।
न सीमित करे वह स्वयं को केवल सुन्दर वस्त्रों और भोग विलास के साधनों में।
घर में रहते हुए भी, परिवार में अपने समस्त कर्तव्य निभाते हुए भी वह निश्चित रूप से अपना उत्थान कर सकती है।
केवल आवश्यकता है कि वह जागे, सजग बने। घर के प्रत्येक कार्य को ईश्वर आराधना के रूप में करे।
स्वयं को अनुशासित करते हुए, अपनी मनपसन्द का कुछ कार्य करे।
अपने अन्दर के गुणों को समय की आँधी में, विरोधों के तूफानों से बचाकर रखे।
यदि उसकी भक्ति सच्ची है, तो ईश्वर अवश्य उस पर कृपा करेगें।
जिस धर्म में भी उसका विश्वास है, वह उसी का पालन करे।
जिस गुरु पर भी उसकी श्रद्धा है, वह उसी को दिन–रात याद करे।
जब उसके कर्मों के भोग समाप्त होगें, तब वह स्वयं ही इस गुमनामी के अंधेरे से बाहर निकल पाएगी।
गुमनामी के काले बादलों के छँटते ही वह इन थोपी हुई जंजीरों को तोड़ पाएगी।
बनाएगी वह एक दिव्य राह अपने लिए और अपने व्यक्तित्व के निहित पक्षों को निखार पाएगी।
जब वह प्रभु की कृपा से निष्काम सेवा का मार्ग अपनाएगी तो अपनी ममता और करुणा से कण–कण को द्रवीभूत कर पाएगी।
यहीं से होगा शुरू उसका एक सफर, जिस पर वह जान पाएगी कि ''मैं एक दिव्य आत्मा हूँ।''
वह जान पाएगी कि प्रभु का अनुभव और साक्षात्कार ही उसके जीवन का अंतिम लक्ष्य

है।
जुड़कर प्रभु से, कर्म करते हुए वह अपनी भावनाओं को एक सही दिशा दे पाएगी।
जान जाएगी वह अपने प्रकाशमय अस्तित्व को और फिर वह निडर बनेगी।
अपनी निर्भयता से अनेकों को अभय प्रदान करते हुए, अपनी एक अलग पहचान बनाएगी।

स्त्री के लिए एक नई दिशा

कब तक सहती रहेगी स्त्री ये अत्याचार? आखिर कब तक?
कब तक जकड़ी रहेगी स्त्री इन बेड़ियों में? बेड़ियाँ जो उसकी अपनी बनाई हुई हैं।
बेड़ियाँ जो उसकी भावनाओं ने उसे पहनाई हुई हैं।
बेड़ियाँ जो उसकी सोच के तार से गुँथी हुई हैं।
बेड़ियाँ जो उसको जन्म से अन्तर में पहनाई गई हैं।
कि तू पुरुष से कमजोर है, कि तू पुरुष से नीचे है।
कौन बनेगा उसका कर्णधार?
जिसको समझती थी वो कर्णधार, वही आज बना है उसका मारनहार
कहाँ है वह ईश्वर जो द्वापर में बना था तारनहार?
क्या यही है उसके परोपकारों का हार?
क्या यही है उसके जननी बनने का पुरस्कार?
क्या यही है उसके अन्तर को छलनी करने का उपहार?
हे ईश्वर! मैं तुझे पुकारती हूँ। डरती हूँ कलियुग से
हे ईश्वर! कब तक नारी सबला होते हुए भी अबला समझी जाएगी?
औरो के द्वारा नहीं केवल, अपने भी द्वारा।
कब तू लौटाएगा उसकी निधि; आत्मविश्वास।
कब तू देगा उसको बुद्धि इन बेड़ियों को काटने की।
आसक्ति ही है गहरी पकड़; जो काट रही नारी की जड़।
कैसे आएगी वह इस गहरी खाई से बाहर?
कैसे पाटेगी वह इस कुँए की दीवार?
कौन देगा उसे सहारा? क्यों दूर है तेरा द्वारा?
तू तो सबके भीतर है समाया। तेरा क्यों है दूर साया?
गहन विषाद ने आज नारी को घेरा। कभी सन्तान तो कभी पति का है घेरा।।

क्या यही उसका जीवन रह जाएगा?
तेरी अनन्त खुशियों पर उसका भी तो अधिकार है। तेरी ही वह रचना, फिर वह क्यों निराधार है? एक सद्गुरु की उसको दरकार है।
एक सद्गुरु जो उसे उसका नया रूप दिखा दे। जो उसे उसके सामर्थ्य से परिचित करा दे। जो उसे आत्मज्ञान दिला दे कि वह ईश्वर का अंश है। तेरा ही प्रतिरूप है। वह पुरुष से कम नहीं अधिक है। जो उसे उसका खोया हुआ आत्मविश्वास लौटा दे। जो उसकी भावनाओं को एक नई दिशा दे।
एक ऐसी दिशा, एक ऐसी राह जिस पर वह पाए अनन्त प्रसन्नता, आनन्द।
वह प्रसन्नता जिस पर उसका पैतृक अधिकार है।
तब वह बनेगी शक्ति जो शिव की अर्द्धांगिनी है।
तब वह बनेगी शक्ति जो शिव की सहभागिनी है।
अपनी आभा से करेगी वह विश्व को उज्ज्वल।
अपनी आभा से करेगी वह तेरे को धवल।।

नारी और सार्थक जीवन

नारी को जिस रोज सच्ची शक्ति मिलेगी वह दुर्गा, काली और सरस्वती बनेगी।
जब वह वास्तव में अपने दैवी रूप को जानेगी तो कभी भी सस्ते प्रलोभनों में न पड़ेगी।
समर्थ होगी वह स्वयं की रक्षा करने में, एक दिव्य बल से वह सुसज्जित होगी।
जान जाएगी वह निरर्थकता इन झूठे सुख–साधनों की और विषय भोगों की।
तब केवल अपने दिव्य स्वरूप में स्थित रहने की ही उसकी लालसा होगी।
आत्म साक्षात्कार की दौलत जिस रोज उसके हाथ में होगी।
वह बनेगी अनेकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत और अपने प्रकाश से अनेकों को प्रकाशित करेगी।
न डरेगी वह किसी से। न ही वह छली जाएगी झूठे वायदों से।
करेगी निर्माण वह एक ऐसी आध्यात्मिक पीढ़ी का, जिसकी रग रग संस्कारों से पगी होगी।
वह तो स्वभाव से ही निर्मात्री है। वह तो स्वभाव से जननी है।
वह तो स्वभाव से ही सहनशील है। वह तो स्वभाव से ही धैर्यवान है।
प्रत्येक मानव की वह एक ऐसी नेत्री (नेता) बनेगी जो धोखा–धड़ी से कोसों दूर होगी।

बनेगी वह इन्दिरा गाँधी अथवा सरोजिनी नायडू।
करेगी वह कस्तूरबा गाँधी अथवा मैत्री, गार्गी जैसे कार्य।
जग में धाक अपनी जमाएगी और अपनी शक्ति से जन–जन को परिपूर्ण करेगी।
स्वयं तो अमर होगी ही, अपने देश को भी उच्च शिखर पर पहुँचाएगी।
जननी तो वो पहले ही है, धरनी अब वो कहलाएगी।
धरा जितनी सहनशक्ति है उसके पास, अपनी भक्ति से जन–जन के हृदय में आलोक फैलाएगी।
विश्व बंधुत्व का दिव्य संदेश फैलाते हुए वह न केवल एक जन्म में अपितु कई जन्मों में सम्मानित की जाएगी।
आवश्यकता है प्रत्येक नारी जागे और स्वयं की शक्ति को जगाए।
शिक्षा के अस्त्र को हाथ में लेकर, स्वार्थ के दायरे को तोड़े।
संपूर्ण विश्व को ही अपना परिवार समझे और विश्वशांति का दिव्य संदेश प्रचारित करे।
तोड़ दे धर्म की दीवारों को और रामराज्य की संरचना करे।
क्या हिन्दू, क्या सिक्ख और क्या ईसाई सब को ही प्यार की नजर से देखे।
सेवा करे और सेवा का दिव्य संदेश अपने व्यवहार से ही प्रदान करे।
सेवा जो निःस्वार्थ हो। सेवा जो निष्काम हो।
प्यार करे तो उदार हृदय से। जिसमें छोटे–बड़े का न कोई भेद भाव हो।
दान दे तो दोनों हाथ से। जिसमें सुपात्र को ही दान पहुँचने का ज्ञान हो।
सेवा, प्यार और दान करते–करते, प्रभु तो स्वयं ही मिल जाएँगे।
सेवा, प्यार और सात्विक दान करते–करते, शक्ति तो स्वयं ही आ जाएगी।
और तब न होगी उसे किसी दूजे की दरकार। किसी दूजे का आसरा।
तभी होगा उसका जीवन सार्थक, अन्यथा ये जीवन होगा यूँ ही निरर्थक।
पुरुष ने अब तक बहुत छला है, उसको कभी कम बुद्धि तो कभी कम शक्तिशाली कहकर।
पर ईश्वर कृपा से वह अब बनेगी, मदर टेरेसा जो अनेकों का उत्थान करेगी।
बरसाएगी वह अपनी करुणा जन–जन पर, और जगत माँ वो बनेगी।
क्या स्त्री क्या पुरुष सब को ही वो एक दिव्य राह दिखाएगी।
आज आवश्यकता है कि वो अपने लिए एक दिव्य सपना देखे।
और अपनी इच्छाशक्ति को जागृत करते हुए उस दिव्य स्वप्न को पूरा करने का

संकल्प करे।
मार्ग में आने वाली छोटी–बड़ी बाधाओं से न घबराए।
निर्भयता से प्रभु को पुकारते हुए इस दुर्गम पथ पर अपना कदम बढ़ाए।
और अपने लक्ष्य को प्राप्त करके ही दम ले। हिम्मत न हारे।
गिरे पर फिर उठ जाए। ठोकरों से न घबराए।
हर ठोकर को अपनी प्रगति का सोपान बनाए।
इसी जन्म में अपना एक अलग स्थान बनाए।
झूमे अपनी सफलता पर, औरों को भी सफल बनाए।
इस जीवन का एक–एक पल सार्थक बनाते हुए उस अनन्त प्रसन्नता और आनन्द को प्राप्त करे।
जिस पर उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।
वह बन सकती है शबरी। वह बन सकती है मीरा।
इस सत्य को वह बार–बार दोहराए और अपना जीवन दिव्य बनाए।
तब प्रभु स्वयं ही उसके घर आ जाएँगें और उसे सफल बनाएँगे।

जब मैं असहाय हो जाती हूँ

जब मैं असहाय हो जाती हूँ, तभी तो सच्चे मन से उस ईश्वर को पुकारती हूँ।
उस ईश्वर को पुकारती हूँ, और अनजाने सूत्रों से मदद मिलने पर खुद अपने अनुभवों से हैरान हो जाती हूँ।
जब तक मैं समझती हूँ कि 'मैं कर्ता हँ' अनेक बाधाओं का सामना पग पग पर करती हूँ।
अनेक बाधाओं का सामना पग पग पर करती हूँ और अनेकों बार हतोत्साहित हो जाती हूँ।
कभी गिरती हूँ। कभी उठती हूँ। जब पूरे प्रयत्न करने के बाद भी असफल ही रहती हूँ तो निराशा के गढ्ढे में गिर जाती हूँ।
फिर गुरु की शिक्षाओं को पढ़ते–पढ़ते, उनको पुकारती हूँ।
करती हूँ अनुरोध उनसे और उनकी शिक्षाओं पर प्रयोग करने की ठानती हूँ।
जब परिणाम शीघ्र नहीं आता है तो अपना धैर्य खो बैठती हूँ और अनेकों बार उनको चुनौती भी दे बैठती हूँ।
जब असहाय पूरी तरह से हो जाती हूँ तो फिर उस परमपिता परमेश्वर को पुकारती हूँ।
और करुँ भी क्या कोई चारा भी तो नहीं रह जाता ? दिन रात उनके सिमरन में ही

गुजरता है, मन के किसी कोने में एक आस का दिया जलता रहता है।
फिर प्रभु मेरे धैर्य की परीक्षा लेने के पश्चात्, मेरी मदद को चले आते हैं किसी रूप में। करते हैं काम मेरा और मुश्किल दूर करते हैं। अपने अनुभव से अब समझ पाती हूँ कि बाधा भी उन्हीं की थी, और निदान भी उन्हीं का था। मेरे अन्दर के अहं को मिटाने का ये मात्र एक तरीका था।
हैं वो कर्ता और वो ही भोक्ता, इस गहन सत्य को धीरे–धीरे अपने अन्तर में रोपित कर पाती हूँ। चाहती हूँ कि और लोग भी इस सत्य को जानें, इसलिए अपने सच्चे अनुभवों को कलमबद्ध करती हूँ।
अपने अनुभवों को कलमबद्ध करती हूँ और उन्हें जन–जन तक पहुँचाना चाहती हूँ। नहीं चाहिए मुझे नाम और यश, अब तो दिन रात प्रभु प्रदत्त ये सेवा ही करना चाहती हूँ।
इस सेवा से मिलता है स्नेह मुझे अपने गुरु का, उस परमपिता परमेश्वर का।
उस स्नेह के प्राप्त करने से अपना जीवन इस धरा पर सफल पाती हूँ।
है कहाँ वो सुख और आनन्द संसार के विषय भोगों में, जो गुरु के सान्निध्य में मैं पाती हूँ?
है कहाँ वो रस संसार के विषय भोगों में जो गुरु के श्री चरणों में ध्यान लगाने से मैं पाती हँ?
अपने ही अनुभवों से अपने लिए एक बेहतर मार्ग का चुनाव कर पाती हूँ।
अब मैं जान चुकी हूँ कि यही अंतिम मार्ग है, इसी पर मिलेंगें मुझे प्रभु और उनकी अनन्त कृपा। अब मैं जान चुकी हूँ कि यही केवल एक मार्ग है जिससे मैं प्राप्त कर सकती हूँ असीम सुख, शान्ति और प्रसन्नता।
फिर भला मेरे से बड़ा बुद्धू और कौन होगा जो संसार के विषय भोगों की तरफ भागेगा?
फिर भला मेरे से बड़ा बेवकूफ और कौन होगा जो संसार के विषय भोगों में रस लेगा?
अब संसार में रहना चाहती हूँ पर विषय भोगों के पीछे भागना नहीं चाहती।
प्रभु कृपा से जो कुछ भी मिला है उसमें सतत संतुष्ट रहते हुए, अनन्त सुख शान्ति और प्रसन्नता प्राप्त करने के मार्ग पर ही चलना चाहती हूँ। कामनाएँ आ रही हैं। वासनाएँ तंग कर रही हैं। ये संसार की माया मुझे निरन्तर नीचे खींच रही है।
पर प्रभु कृपा से तिल–तिल कर के, सेवा के मार्ग पर चलते–चलते, मैं उनका सामना कर पा रही हूँ।
जब कामना और वासना का सामना विवेक और विचार के अस्त्र से करती हूँ तो वह

स्वतः ही क्षीण होने लगती है।
यही सरल सन्देश, मैं जन–जन को देना चाहती हूँ। जो समझ गया वो खिलाड़ी है, बाकि सब अनाड़ी।

मेरे श्वसुर– मेरे मित्र (सत्य कथा)

प्रत्येक स्त्री के लिए विवाह एक नए जीवन का सन्देश लेकर आता है। पति के साथ तालमेल बिठाने के साथ–साथ उसके पूरे परिवार के साथ भी मधुर सम्बन्ध कायम करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है। घर में प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव अलग–अलग होता है। हिन्दू परिवार अधिकांश संकीर्ण मानसिकता के ही होते थे आज से लगभग 30 वर्ष पहले। आज भी कई संयुक्त परिवारों में ऐसी मानसिकता दिखाई पड़ती है।

समय के बदलते हुए परिवेश के साथ जो व्यक्ति अपनी विचारधारा को नहीं बदल पाते वह न केवल स्वयं दुःखी होते हैं अपितु अपने स्वजनों को अकारण ही दुःख देने के हेतु बनते हैं। अनचाहे, अनजाने ही ऐसे व्यक्ति अपनी मानसिकता नई पीढ़ी पर थोपते हुए यह नहीं समझ पाते कि बहू भी एक अलग व्यक्तित्व की स्वामिनी है। उसकी अपनी कुछ इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ हैं जिनको उसने बचपन से संजोया है।

मेरे श्वसुर बहुत ही उदार व्यक्तित्व के स्वामी थे। शुरू से ही उन्होंने न केवल भरपूर सम्मान दिया अपितु अपने स्नेह से मुझे अपने एक नए रूप के दर्शन करवाए। वह हमेशा मुझे अपनी बेटी की ही तरह प्यार करते थे। मेरे जीन्स पहनने पर कुछ लोगों ने आपत्ति की तो तुरन्त उन्होंने मेरा समर्थन किया और कहा, ''अरे पुरुषों के लिए भारतीय परिधान तो धोती है। आज सब पुरुष पैण्ट, कमीज पहनते हैं। यदि ऐसे में स्त्रियाँ भी पैण्ट पहनती हैं तो क्या बुरी बात है?'' उनके इस कथन ने बाकि सब लोगों के मुँह पर ताले लगा दिए।

वह युवावस्था में राष्ट्रीय सेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता थे, अतः उनको सुबह जल्दी उठने की, सैर पर जाने की आदत थी। अक्सर मैं और वो एक साथ सैर पर जाते और वो अपनी राष्ट्रीय सेवक संघ की गतिविधियों की खूब चर्चा मेरे साथ करते। सुबह उठकर दो कप चाय बनाते, एक मेरे लिए, एक अपने लिए। शुरू में तो मुझे बहुत शर्म आती। मैं कहती '' आप मत बनाया करिए, जब तक मैं यहाँ हूँ, मैं

आपको बना कर पिलाऊँगी।'' वह हँसते और कहते, ''मुझे तो आदत है। तुम मेरे हाथ की बनी हुई चाय पियो, मुझे अच्छा लगता है।'' उनके इस वाक्य से मैं एकदम निश्चिंत हो गई। उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर न होने के कारण मैं अनजाने ही उनके प्रति एक सम्मान से भर जाती।

मेरे पति भिलाई इस्पात संयंत्र में कार्यरत् हैं। साल में एक बार वह हमारे पास कुछ दिन रहने के लिए आते। जब उन्होंने देखा कि मुझे कार चलानी नहीं आती तो मुझे कार सीखने के लिए बहुत प्रोत्साहित किया। मैं अपनी मुश्किलें उन्हें बताती तो वह तुरन्त उसका समाधान मुझे देते। उनकी प्रेरणा के कारण आज मैं कार बखूबी चला पा रही हूँ और अनेक कार्य भी सहज स्वयं ही कर लेती हूँ। गाड़ी हाथ में होने से मैं सुबह नियमित रूप से योग कक्षा में भी स्वयं आ पाती हूँ।

एक बार पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा लिखित ''मेरी इक्यावन कविताएँ '' नामक पुस्तक उन्होंने मुझे दी पढ़ने के लिए। हम दोनों ने वह पुस्तक एक साथ बैठकर भी पढ़ी। मुझे धार्मिक पुस्तकें पढ़ते देखकर एक छोटे बच्चे की तरह मुझसे कहते, ''मैं भी ये पुस्तकें पढ़ना चाहता हूँ, पर मुझे रूचि नहीं आ पाती। तुम कैसे इनमें रूचि ले रही हो?'' उन्होंने इसकॉन की अनेक पुस्तकें मुझे पढ़ने के लिए दी। सुबह मेरे साथ योगाश्रम भी आते और अभ्यास करते।

दिल की बीमारी के कारण सन् 1999 में उन्होंने अपने पार्थिव शरीर का त्याग किया। आज भी उनको याद करके मेरा मन सहज ही द्रवित हो जाता है।

बीमारी के समय एक माँ की तरह कई बार उन्होंने मेरी देखभाल भी की। मेरी पसन्द के फल भी स्वयं लाकर रखते मेरे दिल्ली पहुँचने पर। उनके स्नेह ने मुझे उनके एक दिव्य व्यक्तित्व का आभास सहज ही करवाया। दान धर्म भी वह खूब करते थे। दूसरे घर की बेटी को अपनी बेटी जैसा स्नेह देना सरल कार्य नहीं है, ये मैं आज समझ पाती हूँ। उनके चरित्र की उदारता से मुझे आज भी दिव्य मार्गदर्शन मिल रहा है। वह बहुत कम बात करते थे। कभी भी किसी की निन्दा मैंने उनके मुख से नहीं सुनी। क्रोध भी उनको बहुत कम आता था। क्रोध आने से एकदम चुप हो जाते।

उनकी मृत्यु के बाद मेरे जीवन में एक खालीपन आया। उस स्थान को आज तक कोई भी नहीं भर पाया। आज परमगुरु श्री स्वामी शिवानन्द की असीम अनुकम्पा से मैं एक लेखिका बनकर सेवा का कार्य कर रही हूँ। अनेकों बार मेरे मन में विचार आता है कि अगर आज वो जीवित होते तो बहुत प्रसन्न होते। इस लेख को लिखने का केवल एक मात्र उद्देश्य है कि पुरानी पीढ़ी वाले अपनी पुरानी मान्यताओं

को बदलें और अपनी बहू को अपनी बेटी समझें। जो प्यार और सम्मान वो अपनी मान्यताओं को छोड़कर पा सकते हैं, अपनी मान्यताओं को लादकर नहीं। सच्चा प्यार अपनी बात मनवाने में नहीं, दूसरे की बात मानने में है। और यही सुख शान्ति प्राप्त करने की कुंजी है।

एक सच्ची कहानी मेरे पति की रिरिवया पीठ से जुड़ने की

मैं एक विवाहित स्त्री हूँ। विवाह के पश्चात् स्त्री का जीवन पूर्णतया परिवर्तित हो जाता है। खासकर भारतीय समाज जो पुरुष प्रधान है, वो ये उम्मीद करता है कि स्त्री अपने व्यक्तित्व का आमूल चूल परिवर्तन करते हुए, पति की मान्यताओं को ही सदा सही समझे। यदि पति एक संतुलित व्यक्तित्व का स्वामी है तो वह ऐसा कभी भी नहीं चाहता, परन्तु अधिकांश पुरुष ऐसा हो, चाहते ही हैं। कहीं न कहीं उनका अहम् उनकी इस चाहत को हवा देने ही लगता है। मैं एक हद तक इस मामले में भाग्यशाली रही। मेरी ससुराल में मेरे दादा ससुर और ससुर बहुत ही विशाल हृदय के स्वामी थे। अतः उन्होनें तहे दिल से मुझे अपनी बेटी की तरह ही स्वीकारा। आज भी उनको याद करके मैं सहज ही द्रवित हो जाती हूँ।

घर के ऐसे माहौल में मुझे न केवल आगे पढ़ने अपितु आज से 29 वर्ष पहले भी नौकरी करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जीवन में मुझे बहुत कुछ नया सीखने को मिला। सन् 1993 में कमर दर्द की परेशानी के कारण, मैंने भिलाई में सेक्टर 10 में स्थित ज्ञान दर्शन योगाश्रम जाना शुरू किया। यद्यपि मेरे पति को योग में बिल्कुल भी विश्वास नहीं था, तथापि मेरी भावनाओं की कद्र करते हुए उन्होंने ज्यादा मना नहीं किया। क्या जानती थी कि ये मेरी जिन्दगी का एक नया सफर होगा ? नियमित रूप से अभ्यास करने पर तीन महीने के भीतर ही मेरा कमर दर्द एक हद तक ठीक हो गया और मुझे मजा आने लगा। एक साल के बाद जब स्वामी देवशंकरानन्द जी ने मुझे सूर्यनमस्कार सिखाया तो मैं एक असीम ऊर्जा का अनुभव नित प्रतिदिन प्रतिक्षण करने लगी। योग की परिणति इतनी ही है कि वो स्वास्थ्य लाभ दे दे, ऐसा समझते हुए मैंने आश्रम जाना बन्द कर दिया। घर में कुछ समय ही ईमानदारी से योग को मैंने नियमित रूप से किया, फिर उसको धीरे–धीरे छोड़ दिया। शारीरिक और मानसिक परेशानियों के कारण 1997 में मुझे गठिया वात के कारण घुटने में बहुत सख्त दर्द हुआ। मैं पूरी रात सो नहीं सकी। अगले ही दिन पति और बेटे के हल्के विरोध के बावजूद मैंने आश्रम पुनः जाना आरम्भ कर दिया, क्योंकि अपने पुराने अनुभव से मैं

जानती थी कि योग से मुझे आराम मिलेगा।

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से 1997 में एक रोज़ अन्तर्मौन का अभ्यास करते–करते मेरा आध्यात्मिक जागरण हुआ। ऐसा सुख, जिसकी मुझे स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी, पाकर मैं अधीर हो उठी। नित प्रतिदिन जब भी खाली समय घर गृहस्थी के कार्यों से निकाल पाती, स्वामी जी द्वारा बताई गई छोटी–छोटी साधनाएँ करती। उस आनन्द की बूंद को चखते–चखते जीवन एक दिव्य आनन्द से परिपूर्ण होने लगा। मन के किसी गहरे कोने में अहंकार भी आता, सोचती ''औरों को तो नहीं मिल रहा मैं ही बहुत अभ्यास कर के योगी बन रही हूँ।'' जब स्वामी जी को बताती तो वो खूब हँसते और कहते, ''अजी आपने अभी पाया ही क्या है? अभी तो इसी जीवन में इससे कई गुना अधिक आनन्द सम्भव है।'' स्वामी देवशंकरानन्द जी एक उच्चकोटि के साधक थे, अतः उन्होंने धीरे–धीरे मुझे अपने अहंकार पर लगाम लगाना सिखाया। उन्होंने ही मुझे निरन्तर अभ्यास करते जाने के लिए प्रेरित किया।

कक्षा में मुझे अपने पास ही बिठाते और नई–नई साधनाएँ बताते। स्वामी सत्यानन्द को गुरु मैंने उनकी शिक्षाओं को सुनते–सुनते, पढ़ते ही धारण किया मानसिक रूप से। धीरे–धीरे परमहंस स्वामी सत्यानंद के दर्शन की अभिलाषा अन्तर में गहरी होने लगी। अपने अनुभवों से परमहंस स्वामी निरंजनानंद सरस्वती के श्री चरणों में भी मेरी आस्था दृढ़ हो गई। सन् 2005 में जगदलपुर योग सम्मेलन में जाते हुए स्वामी निरंजन एक दिन के लिए राजनांदगाँव रूके। अब मेरे पति को तो गुरु और गुरु के नाम से सख्त नफरत थी। मैं उनके इस दृष्टिकोण के लिए उनको ज्यादा दोषी भी नहीं ठहरा पाती थी क्योंकि आए दिन ढोंगी गुरुओं की सनसनीखेज खबरें, वह अखबार से पढ़कर मुझे सुनाते रहते थे। खैर ! मैं उनको किसी भी तरह राजनांदगाँव जाने के लिए तैयार न कर सकी। अपनी एक सहेली की कार में, अन्य महिलाओं के साथ, मैं स्वामी जी के दर्शन और सत्संग के लिए चली गई।

आशा से अधिक परिणाम मिलने पर, मेरी रिखिया जाने की दबी हुई इच्छा बलवती हो गई। जब मैंने बहुत दबाव डाला तो मेरे पति स्वयं मेरे साथ एक दिन के लिए रिखिया जाने को तैयार हुए। उन्होंने शर्त रखी कि यदि उनको सब वहाँ ठीक लगेगा तो ही मैं वहाँ पुनः जा सकती हूँ। परमहंस स्वामी निरंजन ने अपने कीमती समय में से 35 मिनट का समय हमको दिया। उन्होंने मेरे पहले प्रश्न का जो उत्तर दिया, उसको मैं यहाँ लिख रही हूँ। **प्र0**– स्वामी जी, मेरा पूजा पाठ और साधना करना, इनको तो मेरा पागलपन लगता है, आप क्या कहते हैं ?

उ0– अगर आप घर के काम छोड़– छोड़ कर पूजा पाठ या साधना करती हैं, तो वो हमें नहीं चाहिए। घर गृहस्थी के कर्त्तव्यों को निभाने के बाद यदि आप 10 मिनट भी समय निकाल पाती हैं तो बहुत है।

उनके इस जवाब से मेरे पति बहुत प्रसन्न हुए और समझ गए कि वो मुझे संन्यासिन बनाना नहीं चाहते। उन्होंने स्वामी जी से अनेकों प्रश्न किए। स्वामी जी ने उनके प्रत्येक प्रश्न का स्पष्टता से न केवल जवाब दिया अपितु एक संन्यासी को हमें पूरा आश्रम और उसकी गतिविधियों को दिखाने के लिए भेजा। शतचण्डी यज्ञ का प्रोग्राम दो दिन बाद ही शुरू होने वाला था, उसका निमन्त्रण भी उन्होंने हमें दिया।

स्वामी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर, रिखिया आश्रम देखकर उन्होंने मुझे हर वर्ष शतचण्डी यज्ञ में जाने दिया। सन् 2008 सितम्बर में स्वामी शिवानन्द जन्मोत्सव पर होने वाली श्रीमद्भागवत् कथा में उन्होंने 8 दिन के प्रोग्राम में भाग लिया जो उन्हें बहुत अच्छा लगा। रिखिया पीठ में गरीबों को ही स्वामी सत्यानंद ने गले लगाया है। मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है, कि सन् 2008 नवम्बर में होने वाले शतचण्डी यज्ञ में भी वो अपने मन से गए। गुरूजी का सत्संग उन्हें बहुत अच्छा लगा। उनका जीवन एक नई दिशा में मुड़ गया है, जिसमें उनको बहुत आनन्द मिल रहा है।

रिखिया पीठ की कन्याओं के कीर्तन उनको बहुत अच्छे लग रहे हैं। नित्यप्रति स्वामी सत्यानंद और परमगुरु स्वामी शिवानंद के सत्संग भी सुन रहे हैं। दैनन्दिनी साधना भी उनके जीवन का एक अनिवार्य अंग बन गई है। मैं नतमस्तक हूँ अपने गुरु स्वामी सत्यानंद के श्री चरणों में ! मैं अभिभूत हूँ, स्वामी निरंजन की कृपा और करुणा से !

सौन्दर्य लहरी और मैं (सत्यकथा)

(स्वामी सत्यसंगानंद की शिक्षाओं से)

सौन्दर्य लहरी श्रीमत् आदिशंकराचार्य विरचित देवी की एक ऐसी आराधना है जो उन्होंने उच्च ध्यान की अवस्था में गाई। शंकराचार्य एक उच्च कोटि के साधक थे जिन्होंने 8 वर्ष की अल्पायु में ही घर का त्याग कर दिया था। वह अद्वैत वेदान्ती थे अर्थात् वह एक ही ईश्वर की सत्ता को मानते थे और उसका ही प्रचार–प्रसार करते थे। उन्होंने रूढ़िवाद से हिन्दू धर्म को निकाला और पूरे भारतवर्ष में पुनः धर्म के प्रति विश्वास जाग्रत करने में एक अहम् भूमिका निभाई। उन्होंने कई शक्ति पीठों की स्थापना भी की। श्रृंगेरी स्थित शक्ति पीठ की आज भी बहुत मान्यता

है।

शंकराचार्य के कुछ शत्रुओं (जो उनके धर्म कार्यों के विरूद्ध थे) ने अभिचार मंत्र के द्वारा प्रहार करके उनको रोग ग्रस्त कर दिया, वो उनको मारना चाहते थे। क्योंकि, उनका कार्य अभी पृथ्वी पर पूरा नहीं हुआ था, अतः अपने रोग से मुक्ति पाने के लिए, उन्होंने देवी माँ की आराधना की। वो चाहते तो हकीम, डॉक्टर या वैद्य की शरण में भी जा सकते थे, जैसा कि एक आम आदमी करता है परन्तु उन्होंने जगत जननी माँ को पूरी श्रद्धा और विश्वास के द्वारा पुकारा। उनका हृदय पूर्णतया शुद्ध था। उनका उद्देश्य भी उच्च कोटि का था। उनकी आराधना से प्रसन्न होकर, देवी माँ ने उनको दर्शन दिए। स्वामी सत्संगी ने लिखा है ''जब ईश्वर के दर्शन होते हैं तो वह दृश्य अवर्णनीय है।'' या यूँ कहा जाए कि ईश्वरीय सुन्दरता को शब्दों में बाँधा नहीं जा सकता। वाणी उस अनुभव को बयान करने में असमर्थ होती है, परन्तु देवी माँ की असीम कृपा से शंकराचार्य, उस रूप का वर्णन कर सके। और देवी माँ के रूप का वर्णन ही सौन्दर्य लहरी के 103 श्लोक हैं।

जब मैंने स्वामी सत्संगी की पुस्तक में ऐसा पढ़ा तो उसे अपने जीवन में अपनाने का निर्णय लिया। स्वामी जी ने लिखा है कि 'सौन्दर्य लहरी' एक सम्पूर्ण साधना है। यदि श्रद्धा, विश्वास और भाव के साथ इसको नियमित रूप से किया जाता है तो व्यक्ति न केवल रोग से मुक्ति पा सकता है अपितु जीवन की कठिनाइयों से पार पाने के लिए आत्मबल भी सहज ही प्राप्त कर सकता है। आधिदैविक ताप अर्थात् जिनका इलाज दवाईयों से नहीं हो पाता, उन से व्यक्ति को सहज ही छुटकारा मिल सकता है। यम और नियम सहज ही जीवन में सधने लगते हैं। प्रत्याहार और धारणा का मार्ग भी सरलता से प्रशस्त हो जाता है। उस पुस्तक में लिखा है कि 25 वॉ श्लोक सम्पुट के रूप में सबसे पहले और आखिर में पढ़ना चाहिए। बीच में 3 के गुणा में श्लोक पढ़े जा सकते हैं, जैसे 3, 6 अथवा 9 आदि आदि। आरम्भ में पूरे 103 श्लोक पढ़ने में बोरियत होने लगती है क्योंकि समय भी बहुत अधिक लगता है, संस्कृत समझ भी तो नहीं आती है।

मैंने 25वाँ श्लोक सर्वप्रथम पढ़कर पहले 3 श्लोक पढ़े और फिर 25 वाँ श्लोक आखिर में पढ़ा; देवी माँ को हृदय से पुकारते हुए। मुझे बहुत अच्छा लगा। जब मेरे पति ने कहा कि उनको 2–3 दिन से रात को नींद अच्छे से नहीं आ रही तो मैंने उन्हें सौन्दर्य लहरी पर प्रयोग करने के लिए कहा। रात को सोने से पहले मैंने माँ के चरणों में प्रार्थना करते हुए इसी प्रकार पाँच श्लोक (25 वाँ श्लोक पहले और आखिरी

में, और तीन बीच में) उन्हें सुनाये अटकते–अटकते। अगले दिन उन्होंने बताया कि रात को उनको नींद बहुत अच्छी आई। उनके इस अनुभव से प्रेरित होकर, अब रोज रात को हम दोनों सौन्दर्य लहरी का पाठ नियमित रूप से कर रहे हैं। (मैं पढ़ती हूँ, वो सुनते हैं।) धीरे–धीरे कुछ दिन मैंने पूरे 103 श्लोकों को भी पढ़ा परन्तु अब रोज मैं 24 श्लोक पढ़ती हूँ।

अब मुझे श्लोक समझ आने लगे हैं अतः राग में भी पढ़ पाती हूँ, जिससे उसका आनन्द कई गुणा अधिक बढ़ गया हैं। स्वामी जी की पुस्तक के निर्देशानुसार अब एक सप्ताह से मैंने रोज एक श्लोक लिखना भी प्रारंभ कर दिया है। लिखने में और प्रत्येक श्लोक के चित्र बनाने में मुझे बहुत आनन्द आ रहा हैं। मन भी एक हद तक शांत होता जा रहा हैं। मन की चंचलता ध्यान के समय कम हो रही हैं। आध्यात्म में रूचि बढ़ रहीं हैं। आनन्द की वृद्धि हो रही हैं। मन के किसी गहरे कोने में संतोष का प्रादुर्भाव नित्यप्रति हो रहा हैं। ईश्वर पर विश्वास भी बढ़ रहा हैं। देवी माँ की ऊर्जा से तन–मन आप्लावित हो उठा है। 25 वाँ श्लोक तो दिन रात मेरे मन में गूँजता ही रहता हैं। इतने अल्पकाल में अपनी उपलब्धियों से मैं स्वयं ही आश्चर्यचकित हो उठी हूँ। अब हर परिस्थिति में देवी माँ को सहज ही पुकार पाती हूँ और उनकी शक्ति का अनुभव कर पाती हूँ। अपने अनुभव को चाहकर भी नकार नहीं पाती हूँ। अब दुनिया भले ही कुछ भी कहे, मैं तो दिन रात माँ की आराधना ही करना चाहती हूँ। घर के काम करते हुए, सतत माँ की उपस्थिति का अनुभव करना चाहती हूँ। ये मन धोखा देता है, बार–बार चिन्ता और दुःख के गढ्ढे में धकेल देता है पर अब इस निम्न मन से डर नहीं लगता क्योंकि मेरी माँ मेरे साथ हैं। मुझे उनकी शक्ति का पास है।

समस्त पाठकों से मेरा निवेदन है कि वो माँ की इस सरल आराधना को अपने जीवन का एक अंग बनाएँ और अपने जीवन को इस कलियुग में नई दिशा दें। जीवन में आखिर माँ से अधिक प्यार अपने बच्चे को कौन कर सकता है? तो आओ उस जगत जननी को हृदय से पुकारें और अपने रोम–रोम में उसकी कृपा का अनुभव करते हुए अपना जीवन सुख, शान्ति और प्रसन्नता से भर लें। फिर कहाँ के रोग? कहाँ के दुःख? और कहाँ का विषाद?

सेवा, प्यार और दान– एक रामबाण अस्त्र

चाहती हूँ अब मैं कि करूँ आनन्द से सराबोर सबको।
चाहती हूँ अब मैं कि करूँ सुख से परिपूर्ण सबको।

चाहती हूँ अब मैं कि करूँ प्रसन्नता से आप्लावित सबको।
क्यों ? क्योंकि दूसरों को आनन्द देने से मेरा आनन्द कई गुना अधिक बढ़ जाता है।
क्योंकि दूसरों को सुख देने से मैं अन्तर्तम तक सुख से भर जाती हूँ।
क्योंकि दूसरों को प्रसन्नता से भरने से मेरी प्रसन्नता सतत बनी रहती है।
अब भला मैं गुरु आज्ञा का पालन क्यों न करूँ ? अब भला मैं सतत निरन्तर सेवा क्यों न करूँ ?
गुरु आज्ञा पालन के रामबाण अस्त्र से छूट रहे हैं सब अवगुण और दोष स्वतः ही।
गुरु आज्ञा पालन के रामबाण अस्त्र से गुरु कृपा बरस रही है सतत निरंतर।
अपने ही अनुभव को अब भला मैं कैसे ठुकराऊँ ?
गुरु आज्ञा पालन से ही मेरा स्व छूटता जा रहा। गुरु आज्ञा पालन से ही मेरा ईश्वर के प्रति समर्पण बढ़ता जा रहा।
गुरु आज्ञा है भी तो कितनी सरल ! गुरु कहते हैं सेवा करो वृद्धों, जरूरतमंदों और रोगियों की।
गुरु कहते हैं प्यार करो सबसे उनको अपने जैसा समझ के।
गुरु कहते हैं जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसको बाँटों दूसरों के साथ, दान करो जी भर के।
गुरु का दावा है जितनी सेवा करोगे उतना ही सुख पाओगे, ईश्वर के समीप जाओगे।
गुरु का दावा है जितना भी प्यार करोगे अपने परिवार के अतिरिक्त दूसरों से, उतना ही प्यार पाओगे।
गुरु का दावा है जितना अधिक दान करोगे उतना ही अधिक धन पाओगे माँ लक्ष्मी से।
गुरु की शिक्षाओं को घटित होते देखती हूँ अपने जीवन में साक्षात प्रत्यक्ष।
गुरु की कृपा को निरन्तर, सतत बरसते देखती हूँ अपने जीवन में प्रतिदिन।
यही अब मैं चाहती हूँ कि जन–जन ऐसे गुरुओं की सरल शिक्षाओं को अपनाएँ।
अपने जीवन में सुख, शांति और प्रसन्नता लाएँ।
इस कलियुग में मिले मानव जीवन का पूरा लाभ उठाएँ।
इसी धरा पर स्वर्ग है इसको पल–पल अनुभव करते हुए, अपना जीवन सफल बनाएँ।
मातृ शक्ति तो सतत सेवा करती है, केवल अपने परिवार के अतिरिक्त दूसरों को भी थोड़ा सा इसमें जोड़ना है।
स्त्री तो प्यार से लबालब भरी होती है केवल इसे अपने परिवार के अतिरिक्त दूसरों पर भी थोड़ा सा लुटाना है।

स्त्री तो निःस्वार्थ भाव से भरी होती है केवल इस भाव को अपने परिवार के अतिरिक्त दूसरों के प्रति लाना है।
करेंगी माताएँ जब सेवा, प्यार और दान दूसरों को, सीखेंगे बच्चे भी उनके इस नैसर्गिक गुण को।
सहज ही कर पाएँगी बीज रोपित उनमें अनन्त सुख, शान्ति और प्रसन्नता प्राप्त करने का।
क्या माता अपने बच्चों को सदा सुखी देखना नहीं चाहती?
क्या पिता अपने बच्चों को सदा सुखी देखना नहीं चाहते?
तो आओ मेरे गुरु के इस रामबाण अस्त्र का प्रयोग स्वयं करो और अपने बच्चों को सिखाओ।
दोगे तभी तो तुम पाओगे। यही है कर्म का विधान। यही है उस सर्वनियंता का अटल प्रावधान।

पल पल देखती हूँ चमत्कार सेवा का

पल पल देखती हूँ चमत्कार उस प्रभु की कृपा का अपने जीवन में घटित होते।
पल पल देखती हूँ, उस प्रभु के द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति को होते।
कहीं से कोई भी आ जाता है, मुझे सेवा के दिव्य अवसर देकर चला जाता है।
पल पल देखती हूँ अपने को सेवा भाव से करते और उसका प्रभाव महसूस करते।
फिर क्यों न मैं निरन्तर सेवा करूँ ? फिर क्यों न निरन्तर उस परमपिता परमेश्वर का ही सिमरन करूँ?
जब–जब भर जाती हूँ विषाद से, कामनाओं से, और चिन्ताओं से।
प्रभु किसी रूप में आते हैं, अपनी सेवा करवाते हैं, अपनी मदद करवाते हैं, और मुझे एक दिव्य आनन्द से भर देते हैं।
पल पल देखती हूँ अब सेवा स्वीकार करने वाले को उस ईश्वर के रूप में, प्रतिरूप में।
पल पल देखती हूँ, अनुभव करती हूँ, ईश आराधना के इस सरल साधन को।
इस जग में भी यश प्राप्त करती हूँ और उसके दरबार में भी ऊँचा स्थान प्राप्त करती हूँ।
आम के आम, गुठलियों के दाम वाली कहावत अपने जीवन में चरितार्थ होते हुए नित प्रतिदिन देखती हूँ।
सेवा से इतनी उपलब्धि ! सेवा का इतना वृहद फल ! बिना आशा के, भाव से जब सेवा करती हूँ तो मालामाल हो जाती हूँ।

हैरान हो जाती हूँ अपने ही अनुभवों से क्योंकि अपने अन्दर को मैं अच्छे से जानती हूँ।
घबरा जाती हूँ कभी–कभी अपने अन्दर के अवगुणों से क्योंकि ईश कृपा से अब उनको स्पष्ट देख पाती हूँ।
ईश कृपा से जब उनको स्पष्ट देख पाती हूँ, तभी तो उनके उन्मूलन का प्रयास करती हूँ।
अपने अवगुण का निराकरण स्वतः सेवा के अमोघ अस्त्र से होते देखती हूँ।
निराकरण होते देखती हूँ और अपने ही अनुभवों से हैरान प्रतिदिन हो जाती हूँ।
ये सब इतना सरल! जब अपने अवगुणों को जानती हूँ, पहचानती हूँ, तो फिर अहंकार रूपी दानव से तो स्वतः ही बची रहती हूँ।
देख पाती हूँ उस ईश्वर की प्रत्येक कृति का महत्व इस धरा पर।
समझ पाती हूँ सबका अपना स्थान और रोल उसकी इस सृष्टि में।
सब में उस ईश्वर के रूप को देखने का प्रयत्न अब सतत, निरन्तर करती हूँ।
पल पल उस ईश्वर की कृपा के चमत्कार घटित होते देखती हूँ और धीरे–धीरे अपने स्व को उसके चरणों में समर्पित करती हूँ।

क्या बयान करूँ उस प्रभु की कृपा का?

तेरे होने का अहसास जब मुझे होता है तो मानो एक नशा सा छा जाता है।
भर जाती हूँ एक अनिवर्चनीय आनन्द और ऊर्जा से उस पल, उस क्षण।
कहाँ है ऐसा आनन्द संसार के विषय भोगों में? कहाँ ऐसा रस संसार के विषय भोगों में?
सोचती हूँ। मनन चिन्तन करती हूँ। चाहती हूँ तू आए और दरस दिखाए।
गर दरस न भी दिखाए तो अपना अनुभव तो सतत करवाए ही।
हो जाती हूँ तृप्त अन्तर्तम तक तेरे अनुभव से, कल्पना करती हूँ जब तू आएगा तो क्या होगा?
समझ पाती हूँ अब रहस्य थोड़ा–थोड़ा सन्तों की फकीरी का।
जितना भी सेवा का काम करती हूँ उतना ही धीरे–धीरे तेरे पास खिसकती जाती हूँ।
जब भी सच बोलती हूँ, तेरी ऊर्जा से आप्लावित हो जाती हूँ।
फिर क्यों न मैं सेवा, सेवा और केवल सेवा करूँ?
फिर क्यों न मैं सच, सच और केवल सच बोलूँ?
करती हूँ जब मैं काम भला निःस्वार्थ और निष्काम भाव से,
तू आ जाता है तुरन्त मेरे पास में स्नेह अपना लुटाता है।

इतना स्नेह! इतनी कृपा! मेरी झोली छोटी पड़ जाती है, पर तेरी कृपा तो अनवरत बरसती है।
क्या बयान करूँ तेरी दया का? क्या बयान करूँ तेरी करुणा का?
वाणी अवरुद्ध है! लेखनी असमर्थ है। शब्द नितान्त असमर्थ हैं उस अनुभव को बाँधने में।
मैं नहीं जानती कि क्यों तेरी दृष्टि मुझ पर पड़ी? मैं नहीं जानती कि मेरे किस गुण पर तू रीझा?
क्योंकि अपने अवगुणों को मैं स्पष्ट देख पाती हूँ। क्योंकि दुनियादारी के मामले में एकदम जीरो हूँ।
गिरती हूँ बार–बार लोक व्यवहार में। ठोकर खाती हूँ बार–बार दुनिया के व्यापार में।
क्यों? क्योंकि बात बनाना मुझे आता नहीं। क्योंकि छल कपट करना मुझे अच्छा नहीं लगता।
क्योंकि झूठ बोलना मुझे अच्छा नहीं लगता।
जो मैं सोचती हूँ, वही मैं बोलती हूँ और इसीलिए अनेकों बार प्रताड़ित भी की जाती हूँ।
पर अब तू जो मेरे साथ है, तो जमाने की क्या परवाह?
अब तेरा अनुभव मेरे साथ है, तो दुनिया की क्यों कर करूँ मैं चाह?
छूट रही है आसक्ति धीरे–धीरे। कट रहे हैं इच्छा के बंधन धीरे–धीरे। भर रही हूँ आनन्द और प्रसन्नता से धीरे–धीरे।
नहीं देखता तू कि मैं एक नारी हूँ जिसको पुरुष ने हमेशा हीन बताया है।
नहीं देखता तू कि मैं अनेक अवगुणों और कमजोरियों से भरी हूँ।
तू तो केवल मेरी करुणा को देखता है जो बह जाती है दीन दुखियों को देखकर।
तू तो केवल मेरे भाव को देखता है जो है बहुत गहरा तेरे प्रति।
क्योंकि तू तो अन्तर्यामी है। क्योंकि तू तो मेरे अन्दर देख सकता है।
क्योंकि तू मेरी अन्दर की सच्चाई को जानता है, पहचानता है।
अब जी चाहता है कि तेरी गोद में विश्राम करूँ।
क्योंकि एक केवल तू ही मुझे मेरा अपना नजर आता है।
दुनिया के रिश्ते तो हैं झूठे। दुनिया से उम्मीद करने पर दुःख ही दुःख पाती हूँ।
पर जब भी तुझे पुकारती हूँ, तू दौड़ा चला आता है।

उठाता है अपनी स्नेहमयी गोद में और मेरे जख्मों पर मलहम अपने स्नेह का लगाता है।

चुनती हूँ अब मैं स्नेह तेरा क्योंकि जान चुकी हूँ कि वही केवल अनवरत आनन्द का स्त्रोत है।

नारी हो या पुरुष, तेरे दरबार में सब बराबर है। क्योंकि सब तेरे ही बच्चे हैं।

तूने ही रचा है संसार, ये भेदभाव तो कपोल कल्पित हैं।

अपने अहम् को पोषित करने के लिए कुछ पुरुषों ने नारी को हेय ठहराया है।

तूने तो बनाया है नारी को अपने रूप में, क्योंकि सृजन वो शिशु का करती है।

तूने तो भरा है नारी को अपनी ही ममता और करुणा से, क्योंकि बच्चों से प्रताड़ित किए जाने पर भी माँ हर हाल में बच्चे के लिए दुआ करती है।

भुला देती है बच्चे के समस्त अपराध जब दुःख में बच्चे को देखती है।

करती है प्यार उसको और गोद में अपनी उठाती है।

लुटाती है स्नेह उस पर अनवरत और उसके आँसू पोछती है।

कहाँ है पुरुष में इतनी क्षमाशीलता? कहाँ है पुरुष में इतना धैर्य?

माँ– एक अद्वितीय उपहार विधाता का

कभी–कभी सोचती हूँ, मनन, चिन्तन करती हूँ। विधाता ने जब माँ को रचा होगा तो उसको किस मिट्टी से गढ़ा होगा?

है माँ एक अद्वितीय, अनुपम उपहार मानवता के लिए उस विधाता का।

है माँ एक अनमोल नगीना उस विधाता की सृष्टि में। नहीं है कोई भी बराबर उस नगीने के।

माँ एक ऐसा हीरा है जो अमृत के रस से भरा है। हीरे को गर कोई चख ले तो तुरंत काल के गाल में चला जाता है।

परन्तु माँ रूपी हीरे को गर कोई पूज ले तो विधाता के दरबार में उसका स्थान बहुत ऊँचा उठ जाता है।

है माँ एक जननी जिसने राम, कृष्ण और अनेकों अवतारों को जन्म दिया।

न केवल जन्म दिया अपितु अपने दूध रूपी खून से सींचकर उस कोमल पौधे को बड़ा किया।

किए काम इस धरा पर अनेक महापुरुषों ने बड़े–बड़े, पर अपनी माँ का ऋण वो कहाँ उतार पाए?

मेरे गुरु स्वामी सत्यानंद हैं आज के युग में स्त्रियों के कर्णधार, अपनी माँ का ऋण

चुकाने का एक प्रयास वे कर रहे।

सदियों पहले महर्षि दयानंद ने भी स्त्रियों को गायत्री मंत्र का अधिकार दिया, यज्ञ का अधिकार दिया जो रूढ़िवादियों ने उनसे छीना था।

करती हूँ प्रणाम ऐसे महापुरूषों के चरणों में बार–बार।

हैं सच्चे ब्रह्मज्ञानी जो जानते हैं, मानते हैं कि ईश्वर की प्रत्येक कृति में उसका ही अंश है।

ईश्वर की प्रत्येक कृति में उसका ही अंश है, वही आत्मा है। पुरुष चाहकर भी, कोशिश कर के भी माँ का स्थान ग्रहण कर सकता नहीं।

है असीम करुणा, दया और क्षमा माँ के अन्तर में।

है माँ देवी का रूप इस धरा पर। गीले में खुद सोती है, पर बच्चे को सूखे में सुलाती है।

केवल और केवल देने में ही विश्वास रखती है। बालक के जरा सा पुकारने पर दौड़ी चली आती है।

तो आओ! हम सब नारी को सम्मान दें। उसके मातृरूप का सतत स्मरण करें।

एक महान् संत की वाणी का मनन चिन्तन करें और अपने उत्थान का मार्ग प्रशस्त करें।

कन्याएँ दैवी ऊर्जा का स्त्रोत हैं।– **स्वामी सत्यानंद**

कन्याएँ दैवी ऊर्जा का स्त्रोत हैं, यही कन्या बनेगी एक माँ जो अवतारों को जन्म देगी। अवतारों को जन्म देगी और भविष्य की दृढ़ नींव डालने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

दें उचित अवसर शिक्षा और प्रगति के इन कन्याओं को ताकि भारत का भविष्य उज्ज्वल बने।

भारत का भविष्य उज्ज्वल बने और भारत पुनः सफलता के शिखर पर पहुँचे।

चुकाएँ कर्ज हम अपनी माँ का और इस राह में चुने हीरे मोती आत्म ज्ञान के।

परमार्थ में ही स्वार्थ है, ये हम अपने अनुभव से जानें, न कि शिक्षाओं से।

स्त्रियों को मेरा आह्वान

एक स्त्री की कहानी, है सदियों पुरानी
परन्तु इसमें है नित प्रतिदिन नूतन रवानी
कभी माँ, कभी पत्नी और कभी बहन वो बनती है।
कभी बेटे, कभी पति और कभी भाई का अनुशासन वो सहती है।।
अनुशासन जो कभी–कभी उसके अस्तित्व को ही खत्म कर डालता है।

अनुशासन जो कभी–कभी उसको अपने से ही बहुत दूर ले जाता है।।
अनुशासन जो कभी–कभी अनावश्यक ही होता है।
अनुशासन जो कभी–कभी उसे विद्रोह करने पर मजबूर करता है।।
आखिर सहेगी वो कब तक दूसरों का शासन?
उसे भी ईश्वर ने भेजा है इस धरा पर सुसम्पन्न कर।
सुसम्पन्न? सुसम्पन्न है वो प्रभु की विशेष करुणा और दया से।
मातृत्व के गुण से ईश ने है उसको भरा।।
बालक को अपने शरीर से ही है वो रचती। बालक को अपने खून से ही है वो सींचती।।
चोट लगने पर बालक के उफ करने से पहले उफ वो ही है करती।
दिन रात अपशब्द सहती है परन्तु सेवा से पीछे न हटती है।।
बच्चा खाँसता है तो माँ का कलेजा हिलता है।
अपने ही मोह की जंजीरों में वह ममता से जकड़ी रहती है।।
परन्तु पुरुष उसे कमजोर समझने की भूल न करे।
उसके अन्दर शक्ति है दुर्गा की और काली की।।
ईश्वर के नाम से पहले उसका नाम लिया जाता है।
ईश्वर भी उसको बराबरी का दर्जा देते हैं।।
फिर पुरुष उसको दबाकर क्यों अपना अहम् पोसता है।
अहम् जो उसको नीचे गिराता है, प्रभु से दूर ले जाता है।।
स्त्री अत्याचार (कभी शारीरिक और कभी मानसिक) सहती है और मजबूत बनती है।
अतः प्रत्येक स्त्री को चाहिए कि वो सहे और मजबूत बने।।
जब वो मजबूत बन जाएगी। पुरुष स्वयं ही उसके कदमों में झुक जाएँगे।
दिखाते हैं जो स्वयं को श्रेष्ठ आज उससे, स्वयं ही धूमिल हो जाएँगे।।
आज जरूरत है नारी को मजबूत बनने की।
अपने दिव्य स्वरूप को जानने की और पहचानने की।।
आध्यात्म के रास्ते पर नारी शीघ्र प्रगति करती है। यदि अपने मोह और ममता की जंजीरों को तोड़ पाती है।।
ये संतो का कथन है और मेरा सच्चा अनुभव है।
नारी में लगन और मेहनत, विश्वास के साथ कूट–कूटकर भरे हैं।।
उसमें समर्पण की गहन शक्ति है, श्रद्धा तो उसका सहज स्वभाव है।

अतः प्रत्येक नारी को चाहिए कि वह जागे। जमाने के दुःख से घबरा कर न भागे।।
जमाने को ईश तक पहुँचने की सीढ़ी समझे।
सब कुछ देखे परन्तु उससे डरे नहीं, घबराए नहीं।।
अपने ईश्वर पर भरोसा रखे और अपनी आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करे।
जिस दिन वह स्वयं को जान जाएगी, अपने दिव्य स्वरूप को पहचान जाएगी।।
वह बनेगी पुरुषों से बेहतर, निडर और प्रभु की प्यारी।
वह करेगी प्रभु के काम। वह बनेगी गार्गी, मैत्रेयी अथवा मीरा।।
ऐसा उज्ज्वल भविष्य लेकर, वह काहे आज छोटे–छोटे दुःखों से परेशान है?
प्रत्येक दुःख तो उसकी प्रगति का दिव्य सोपान है।
सीता ने क्या अग्नि परीक्षा नहीं दी थी?
पुरुष के द्वारा प्रताड़ित की गई थी। परन्तु क्या आज वह श्रीराम के साथ पूजी नहीं जाती?
मेरा आह्वान है समस्त नारी जाति को, कि वो एक सद्गुरु का चयन करे।
एक ऐसा सद्गुरू जो उसके हर भ्रम को दूर करे।।
घर में ही रहकर प्रत्येक नारी अबला से सबला बन सकती है।
ये विश्वास अपने मन के अन्दर पक्का करे।
विश्वास की नाव में, श्रद्धा का खेवटिया ही करेगा उसकी नैया पार।
आवश्यकता है अपनी हिम्मत को बनाए रखे और घबराए बिना आगे बढ़ती रहे।।
क्या प्रत्येक पुरुष एक गोपी नहीं है? प्रभु ही केवल और केवल एक परम पुरुष हैं।

क्या चाहिए स्त्री को आज ? (स्वामी सत्यानंद की शिक्षाओं से)

स्त्री को आज चाहिए कि वह सम्मान की इच्छा न करे क्योंकि यही इच्छा उसे दूसरों का गुलाम बनाती है।
स्त्री को चाहिए कि वह यश और प्रसिद्धि की इच्छा न करे क्योंकि यही इच्छा उसे दूसरों के चरणों में झुकाती है।
स्त्री को चाहिए कि वह ममता और मोह की बेड़ियों को तोड़े क्योंकि यही बेड़ियाँ उसे जकड़े रहती हैं।
बेड़ियाँ तो चाहे लोहे की हों या सोने की, बेड़ियाँ ही हैं।
यही बेड़ियाँ उसे प्रभु से दूर करती हैं। बनती है बाधा उसके ईश्वर साक्षात्कार के मार्ग की।
कर देती है उसे दूर अपने आत्म स्वरूप से और दुःख असंख्य दिलवाती हैं।

झूलती है स्त्री कभी पुत्र और पति की इच्छाओं के बीच, करती है कामना, प्रार्थना सतत उनके कल्याण की।

इस ऊहापोह में ही अपना पूरा जीवन व्यतीत करती है। अपने लिए कुछ क्षण भी परमार्थ की डगर चुन नहीं पाती है।

नहीं चल पाती है अपने स्वरूप को प्राप्त करने के मार्ग पर क्योंकि भावनात्मक रूप से वह कमजोर होती है। स्त्री को चाहिए कि वो अपनी भावना को ईश्वर (जिसमें भी उसका विश्वास हो) के श्री चरणों से जोड़े।

घर परिवार के कर्त्तव्यों को निभाते हुए, थोड़ा सा सेवा का काम करे, अपने परिवार वालों से बाहर का।

तभी होगा उसका जीवन सार्थक। करे हासिल अपने अधिकारों को और कर्त्तव्यों से मुँह न मोड़े।

मेहनत और लगन से, नियमित रूप से एक नेक राह पर चले।

अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालते हुए, दूसरे बच्चों पर भी अपने स्नेह की दौलत लुटाए।

जाने दुनिया की असलियत और सतर्क रहते हुए अपनी आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करे।

रहे सम सुख और दुःख में क्योंकि इच्छा तो ईश्वर की ही पूरी होगी फिर कैसा दुःख और कैसा विषाद ?

करे दृढ़ नींव अपने विश्वास की और दुःख में ईश्वर को सच्चे दिल से पुकारे।

तभी होगा उसका निर्वाण इसी धरा पर जीते जी, परिवार के बीच रहते हुए भी।

रिखिया पीठ की कन्याएँ – एक अनुभव

परमहंस श्री स्वामी सत्यानंद की तपस्थली रिखिया पीठ एक ऐसा इलाका है जो आज से कुछ वर्ष पहले एकदम पिछड़ा हुआ था। गरीबी और भूख ही वहाँ के लोगों का भाग्य था। स्त्रियों के पास भी पहनने को ठीक से वस्त्र नहीं थे। अनेक घरों में कई–कई दिन चूल्हा भी नहीं जलता था। यह सन् 1988 की बात है। आज सन् 2009 में वहाँ के बच्चों को देखकर सहसा विश्वास ही नहीं होता कि ये इसी पिछड़े क्षेत्र के निवासी हैं।

रिखिया पीठाधीश्वरी स्वामी सत्संगी ने वहाँ के बच्चों, खासकर कन्याओं को, ऐसा प्रशिक्षित किया है कि वो शहरों के बच्चों से कहीं अधिक प्रतिभाशाली हैं। भारतीय संस्कृति में कई वर्षों से लड़कियों को परिवार पर बोझ समझा जाता रहा है

क्योंकि दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के दानव ने जन–जन को जकड़ लिया है। आज भी कुछ प्रान्तों में कन्या के जन्म के पश्चात् उसे जहर देकर मार दिया जाता है।

रिखिया की कन्याएँ रामायण, गीता, सौन्दर्य लहरी, ''श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् और चमक प्रश्नः'' के कठिन श्लोकों का एकदम सरलता से ऐसा सुन्दर गायन करती हैं कि प्रत्येक आगन्तुक मन्त्र मुग्ध हो जाता है। उन कन्याओं के कीर्तन की सी.डी. की देश–विदेश में बहुत मांग है। प्रसाद के रूप में स्वामी जी गिने चुने भक्तों को ये उपहार देते हैं जो पाने वाले के लिए अनमोल होता है। सब कार्यक्रमों में स्टेज अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में बखूबी संभालती हैं। हवन भी ये कन्याएँ खूब अच्छे ढंग से करती हैं। दूर–दूर गाँव से साईकल पर कम्प्यूटर, अँग्रेजी और संगीत की शिक्षा लेने आना आसान तो नहीं है। कुछ के पास तो साईकल नहीं हैं, अतः पैदल ही आती हैं। सन् 2008 के शतचण्डी महायज्ञ में कई कन्याओं को कम्प्यूटर द्वारा आश्रम के कैलेण्डर डिजाइन करने और अन्य काम करने के लिए लेपटॉप उपहार रूवरूप दिए गए, जो उनके लिए जापान से श्री स्वामी जी के किसी भक्त ने भेजे थे। जो लड़कियाँ 16–17 साल की उम्र में लेपटॉप पर काम कर रही हैं, उनका भविष्य कितना उज्ज्वल है ! प्रतिभावान, मेहनती कन्याओं को आश्रम की ओर से उच्च शिक्षा के लिए मदद भी की जाती है।

इस वर्ष इन कन्याओं ने भरतनाट्यम, ओडिसी और कुचिपुड़ी जैसे कठिन नृत्यों को खूब कुशलता से स्टेज पर किया और सब दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। कई वर्षों में इन कठिन शास्त्रीय नृत्यों को कलाकार सीख पाते हैं। इन कन्याओं ने कुछ ही महीनों में कड़ी मेहनत के पश्चात् इनमें दक्षता प्राप्त कर ली। श्री स्वामी जी की तपस्या के फलस्वरूप, इन बच्चों में संस्कारों की एक ऐसी दृढ़ नींव डली है जिससे इनकी चेतना का वृहद् विस्तार हो गया है। उन कन्याओं को देखकर सहज ही उनके भाग्य पर रश्क हो जाता है। रिखियापीठ में बटुक (लड़के) कन्याओं पर अपना वर्चस्व जमाने का कोई प्रयत्न नहीं करते। हर क्षेत्र में कन्याएँ, बटुकों से आगे ही रहती हैं।

रिखिया पीठ की महिला संन्यासिन

परमहंस स्वामी सत्यानंद की तपस्थली रिखिया पीठ में महिला संन्यासिनों की संख्या बहुत अधिक है। और उसका एक बड़ा कारण है कि वहाँ की पीठाधीश्वरी स्वामी सत्संगी एक महिला है। सन् 2007, मार्च में जब मुझे पहली बार रिखिया में

रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो उनको मैंने एक स्नेहमयी, करुणामयी माँ के रूप में जाना। वहाँ के प्रबन्धन का कुशल निर्देशन करते हुए, वह सभी आगन्तुकों की आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग भी सरलता से प्रशस्त करती हैं।

अनेक स्थानों पर कई महिला संन्यासिन उनको इस वृहद कार्य में भरपूर सहयोग देती हैं। देश विदेश से आई हुई इन संन्यासिनों को देखकर सहसा ही विश्व बन्धुत्व का विचार मन में आता है। पाश्चात्य देशों से आई हुई ये संन्यासिन, कुशलता पूर्वक हिन्दी बोलती हैं और बच्चों को प्रशिक्षित करने से पूजा तक के कार्य बखूबी निभाती हैं। रामायण और गीता भी वो नियमित रूप से पढ़ती हैं, यद्यपि पढ़ना और समझना उनको कठिन लगता है। सौन्दर्य लहरी, शिव महिम्नः स्त्रोत और चमक प्रश्नः (शिव स्तुति) जैसे कठिन मंत्रों के स्पंदनों का वो भरपूर आनन्द उठाती हैं। छोटे–छोटे आदिवासी बच्चों को भाषा के अभाव में संभालना आसान तो नहीं है। ये संन्यासिन कन्याओं और बटुकों (लड़कों) को आश्रम में अंग्रेजी, कम्प्यूटर और संगीत की शिक्षा देती हैं।

एक महिला होने के नाते, मुझे वहाँ जाकर एक अन्दरूणी सुरक्षा का एहसास सतत रहता है। स्वामी सत्यानंद ने ही सर्वप्रथम महिलाओं को पूर्ण संन्यास देने का शुभारम्भ किया। कई पंथों ने इसका विरोध भी किया; परन्तु आज अनेक पंथ महिलाओं को संन्यास दे रहे हैं। श्री स्वामी जी ने कहा, ''कुछ महिलाएँ घर गृहस्थी और नौकरी के लिए नहीं होती। वे अपनी आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करना चाहती हैं। समाज को कोई अधिकार नहीं है कि वो अपना निर्णय उन पर थोपे। उदाहरणतया स्वामी सत्संगी ने कई वर्षों तक एयर होस्टस (Air Hostess) की नौकरी करते हुए देश विदेश घूमा।

स्वामी सत्संगी – एक अनोखी माँ

स्वामी सत्संगी का पूरा नाम ''स्वामी सत्यसंगानन्दा सरस्वती'' है। उन्हें कुछ वर्ष पहले उनके गुरु श्री स्वामी सत्यानंद ने रिखिया पीठाधीश्वरी की उपाधि से विभूषित किया। रिखिया भारत के एक प्रान्त झारखण्ड में स्थित छोटा सा ग्रामीण क्षेत्र है। आज से कुछ वर्ष पहले वहाँ पर लोगों के पास न तो पहनने के लिए कपड़ा था और न ही खाने के लिए अन्न। 1989 में स्वामी सत्यानन्द ने ईश्वरीय आदेशानुसार इसको अपनी तप स्थली चुना और उनके शिष्यों ने यहाँ आश्रम निर्माण का वृहद कार्य आरम्भ किया। स्वामी सत्संगी ने रिखिया का जीर्णोद्वार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने यहाँ के बच्चों को अपने बच्चों की ही भाँति संरक्षण में ले कर उन्हें पढ़ने लिखने से मन्त्रोच्चार तक सिखाया। आश्रम में अंग्रेजी, संगीत और कम्प्यूटर जैसे विषयों की शिक्षा देकर उनमें कुशल स्टेज संचालक बनाया। आज ये कन्याएँ और बटुक जिनकी उम्र 7 से 13 वर्ष तक है, आश्रम में हर कार्यक्रम के संचालन में बखूबी सक्रिय (Active) भूमिका निभाते हैं। उनको देखकर कोई भी ये नहीं कह सकता कि वो गरीब आदिवासी पिछड़े क्षेत्र के बच्चे हैं।

श्री स्वामी ने उन्हें दैवी ऊर्जा का स्त्रोत बताया है। अतः हर कोई सम्मान की दृष्टि से देखता है और सम्मान भी देता है। स्वामी सत्संगी को अपने इन 1500 बच्चों पर गर्व है। और क्यों न हो ? ये बच्चे एक ऐसी पौध हैं जो भारतीय संस्कारों से रची पगी है। ये पौध भारत की नींव दृढ़ करने में एक अहम् भूमिका निभाएगी और भारत को उन्नति के शिखर पर ले जाएगी।

मुझे गर्व है कि ऐसी स्नेहमयी माँ के आँचल का आश्रय मुझे प्राप्त हुआ जिनके निर्देशन से मेरी आध्यात्मिक प्रगति को एक नई उड़ान मिली। पग–पग पर आश्रम में आने वाले हर जिज्ञासु का वह स्नेह से मार्गदर्शन अनथक रूप से करती हैं अत्यधिक व्यस्त होने के बावजूद। मैं नतमस्तक हूँ उनके इस अनूठे व्यक्तित्व पर, जिन्होंने परायों को अपना बना लिया है स्नेह, ममता और प्यार से!

माँ कैकेयी – एक कलंकिनी ?

दुर्गा सप्तशती, श्री दुर्गा जी की ऐसी प्रार्थना है जो जग प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ की न केवल सर्वत्र मान्यता है, अपितु वर्ष में दो बार नवरात्रि के 9 दिन भक्त रोज इसका सम्पूर्ण पाठ भी करते हैं। दुर्गा सप्तशती में क्षमा प्रार्थना में बार–बार ये जिक्र आता है, कि पुत्र तो कुपुत्र होता है परन्तु माता कुमाता नहीं होती। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरित मानस में भी देवताओं के षड़यन्त्र का पूरा वर्णन है। कैसे देवताओं ने माँ सरस्वती से अनुग्रह किया और वह मन्थरा की जीभ पर जाकर विराजी। राक्षसों का संहार करने के लिए ही तो श्रीराम का जन्म हुआ था। सत्योपाख्यान में ऐसा वर्णन आता है कि एक बार जब श्रीराम बचपन में राज भवन से भाग कर सरयू तट पर खेलने चले गए तो माँ कैकेयी उनको वापिस लाने गई रथ लेकर। तब श्री राम ने कहा था कि माँ, तुम्हारे कहने पर मैं खेल छोड़ कर जा रहा हूँ, तुम्हें भी मेरे कार्य में सहायक होना होगा। एक बहुत बड़ा कलंक अपने माथे पर लेना होगा। माँ कैकेयी, तब श्री राम को वचन देती हैं और इतने बड़े अनर्थ का कारण बनती हैं। चित्रकूट की सभा में श्री राम ने स्वयं कहा कि जो माँ कैकेयी को मेरे वन

गमन का कारण समझता है वह मूढ़ और अज्ञानी है। ऋषि भारद्वाज ने भी भरत को सांत्वना देते हुए कहा था कि इसमें कैकेयी का कोई दोष नहीं है, ये सब तो भगवान की लीला है। अपने पति की मृत्यु का कारण बनीं, अपने पुत्र के कोप का भाजन बनीं, परहित के लिये ! धन्य है माँ कैकेयी ! है इतना साहस किसी में आज कि परहित के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दे ? है इतना साहस किसी में आज इतना कि परहित करे और नाम और यश न चाहे ?

थीं वो एक ऐसी देवी जो इतिहास में कालिख अपने मुँह पुतवा कर भी, पुत्र के तिरस्कार को पल–पल सह कर भी राक्षसों के संहार का हेतु बनीं और समस्त जीवन वैधव्य की चादर ओढ़े जीती रहीं।

नारी का बदलता स्वरूप

नारी जो थी घर की जीनत आज तक, चली है नाम कमाने संसार में।

नारी जो समझी जाती थी केवल और केवल गृहकार्यों के काबिल आज तक, चली है धाक जमाने पूरे संसार में।

नारी जो समझी जाती थी दूसरों पर निर्भर केवल, चली है पूर्णतयाः आत्मनिर्भर होने। अपने व्यक्तित्व को निखारते हुए, संवारते हुए चली है समाज में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाने।

है वो एक असीम अनन्त आत्मा, जो उस परमपिता ईश्वर की सन्तान है।

हैं वो सभी गुण उसमें, जो ईश्वर ने पुरुष में भरे हैं।

है अधिकार उसको, अपनी हस्ती को उस ईश्वर से जोड़ने का।

है सामर्थ्य उसमें, अपना स्वरूप जानने का और पहचानने का।

गया वो जमाना जब नारी केवल घर का एक साजो समान थी।

आज नारी जागरुक है अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रगति के लिए।

है पहिया वो जरुरी, गृहस्थी की गाड़ी का।

पुरुष को उसको बराबर स्थान देना ही होगा, गर चाहिए उसको सुख, शांति और प्रसन्नता।

पुरुष को उसको सम्मान देना ही होगा, गर चाहिए उसको सुख, शांति और प्रसन्नता।